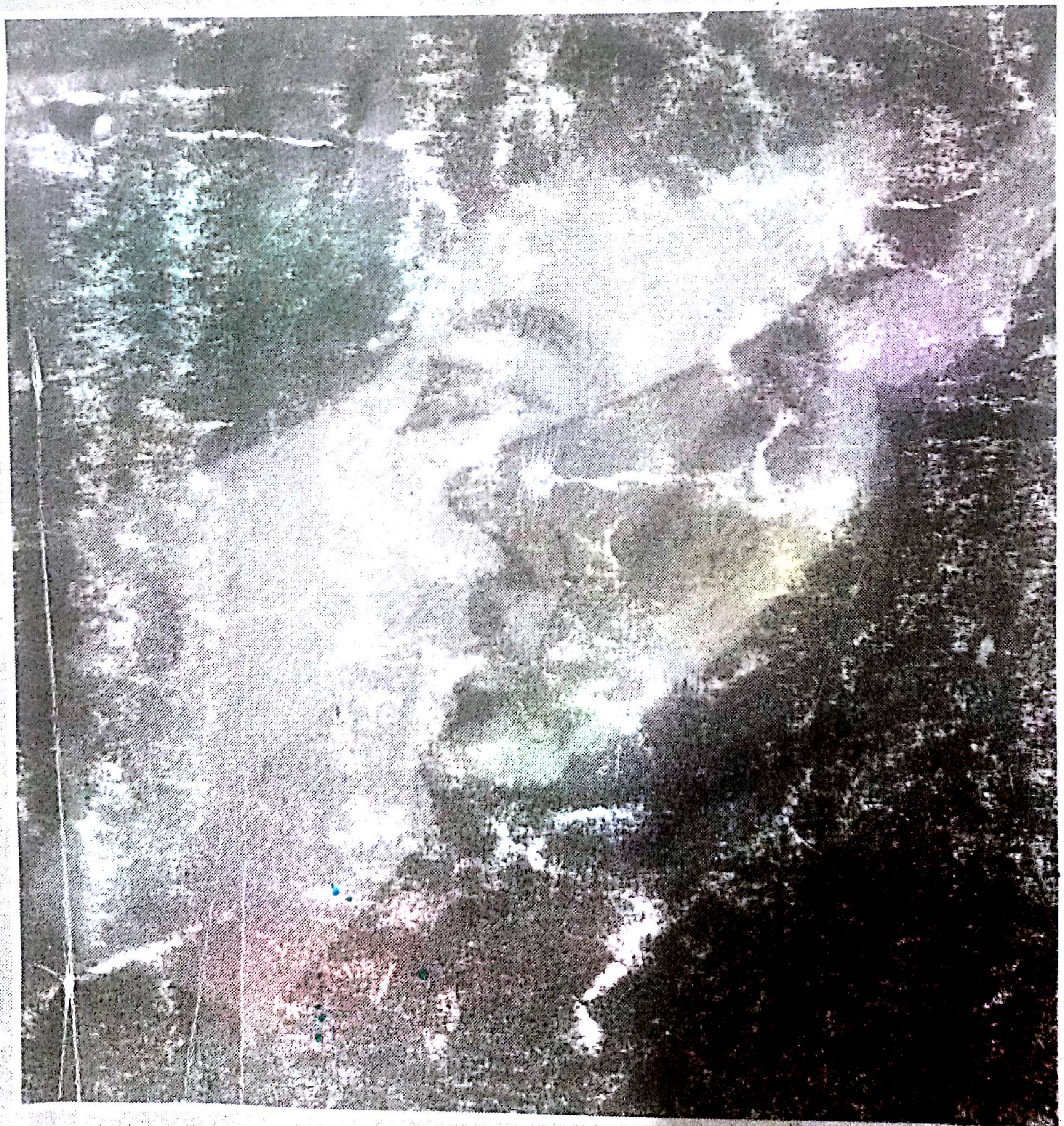
काल कोठरी

स्वदेश दीपक



वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com

KAL KOTHRI
by Swadesh Deepak
ISBN : 81-8143-609-1
Play

संस्करण 2005, 2015
आवृत्ति 2016
मूल्य : ₹ 45

हर्ष प्रिंटर्स, दिल्ली-110 093 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

काल कोठरी

अंक 1

दृश्य-1

रिहर्सल का कमरा और घर

राजीव : पढ़ लिया नया नाटक, कैसा लगा?

महेन्द्र : हाँ, पढ़ा। 'छठी का दूध याद आना' मुहावरे की समझ आ गई। हे भगवान, क्या भाषा है। शब्दों की बाढ़, भयंकर बाढ़। डुबोयेगा, जरूर डुबोयेगा, हमें भी और दर्शकों को भी।

कान्ता : मैं तो दो बार पढ़ गई। मुझे तो सब्जेक्ट की समझ ही नहीं आई।

महेन्द्र : आप सुन्दर जो हैं।

कान्ता : क्या मतलब?

महेन्द्र : सुन्दर औरतें हमेशा बेवकूफ होती हैं। ब्यूटी एण्ड ब्रेन सैल्डम गो टुगेदर।

कान्ता : तुम लिमिट्स क्रास कर जाते हो।

महेन्द्र : लिमिट्स तो भगवान ने क्रास कर दी आपको बनाने में। भई हम कौन होते हैं सब्जेक्ट पसन्द करने वाले। डायरेक्टर को नाटक पसन्द आ गया, किस्सा खत्म। हम तो खिलौने हैं, खिलौने। कौल साहब चाबी भरेंगे

और हो जायेंगे हम बोलना शुरू।

राजीव : यार महेन्द्र, तू एक्टर है या आलोचक। एक ही फिकरे में या तो लेखक की हत्या या उसे सातवें आसमान पर। मैं मानता हूँ लेखक कुछ ज़रूरत से ज्यादा आदर्शवादी है। लेकिन कुछ है ज़रूर इस नाटक में।

महेन्द्र : क्या है?

राजीव : पता नहीं। अभी समझ नहीं आया।

महेन्द्र : कभी आयेगा भी नहीं। लद गया ज़माना आदर्शवाद का। लेकिन इस नाटक के पात्र, सारे के सारे कटिबद्ध हैं– प्राण जायें पर वचन न जाये। लेकिन तू चिन्ता न कर कौल साहब की हमेशा की तरह चमचेबाजी जारी रख। तुझे तो वह बड़ा रोल देंगे ही।

कान्ता : महेन्द्र, तुम कभी-कभी बहुत कमीने हो जाते हो।

महेन्द्र : कमीना हूँ तभी तो थियेटर करता हूँ। घरवालों की गालियाँ तो मिलती ही हैं, यह नाटक किया तो दर्शकों की भी मिलेंगी। कहो तो लिखकर दे दूँ।

बलवंत : रजत जी नहीं आये अभी तक। देखें, वह क्या कहते हैं।

महेन्द्र : आयेंगे। हमेशा की तरह देर से आयेंगे। कौल साहब ने उन्हें हीरो बना दिया है, हीरो। लम्बी स्पीच। स्टेज पर दहाड़ता रजत और तालियाँ पीटते दर्शक। उसे ज़रूर पसन्द आया होगा यह नाटक। हर पेज पर प्रवचन देता नायक।

बलवंत : एक्टर तो अच्छे हैं रजत जी...

महेन्द्र : हाँ, बहुत अच्छे। हम मंच के रसिया तो पाँच साल से झख मार रहे हैं। कभी सन्तरी और बहुत हुआ तो

मंत्री। और सुन, यह रजत जी, रजत जी का पहाड़ा मत रटा कर हर वक्त। तू तो उसकी एबसैंस में भी भक्ति-भाव से विभोर रहता है। एक माला खरीद दूँ। घर जाकर भी रजत जी का नाम जपा कर। हमारा चीफ़ है, चीफ़।

कान्ता : तुम आज कुछ अधिक कटु हो रही हो गान्धारी।

(रजत का प्रवेश। सबने अभिवादन किया)

राजीव : पढ़ लिया। कैसा लगा नाटक आपको?

रजत : मरवाएगा। हर हालत में मरवाएगा। हे भगवान। नाटककार को बोलने की बीमारी है। हैमलेट भी कब्र में करवटें बदलेगा।

राजीव : फिर कौल साहब क्यों करना चाहते हैं यह नाटक?

रजत : दया आ गई है लेखक पर। बता रहे थे बेचारे ने आज तक दस नाटक लिखे हैं। एक भी स्टेज नहीं हुआ।

महेन्द्र : लेकिन क्यों नहीं आती दया उनको हम पर। हमारे दर्शकों पर। आप बात करेंगे उनसे?

रजत : करूँगा, ज़रूर करूँगा। हमें और कुछ मिले न मिले, काम करने में एक सेटिस्फैक्शन तो मिलनी चाहिए न।

महेन्द्र : नायक का रोल तो आपको ही मिलेगा।

रजत : इस नाटक में तुम कर लो हीरो का रोल, शर्तिया जूते पड़ेंगे। नायक बन जूते खा।

(कौल का प्रवेश)

कौल : पढ़ लिया आप लोगों ने-कैसा लगा?

(सब चुप)

कौल : भई आप लोग खुलकर बात करें। हम अगर कनविन्स

नहीं होंगे तो नाटक क्या ख़ाक करेंगे।

महेन्द्र : सर, भाषा बहुत कठिन है।

राजीव : आदर्श ही आदर्श। सारे पात्र अपने-अपने आदर्शों का ढोल बजा रहे हैं।

रजत : नायक की स्पीचें बहुत लम्बी हैं।

कौल : तुम कब से डरने लगे लम्बी स्पीचों से। कई बार पहला रिएक्शन हमेशा नेगेटिव होता है। जानते हो 'वेटिंग फ़ार गोदो' पहली बार कहाँ हिट हुआ था। अमेरिका की एक जेल में, जब कैदियों के सामने स्टेज किया गया।

रजत : यह नाटक भी हमें किसी जेल में ही करना पड़ेगा। बीच में उठने की हिम्मत तो नहीं करेगा कोई।

महेन्द्र : सर, रजत जी बता रहे थे आपको लेखक पर दया आ गई। दस नाटक लिखे। एक भी स्टेज नहीं हुआ आज तक। (अभिनय की आवाज़ में) क्यों नहीं आती आपको दया हम पर। यह किन घोर अपराधों का घोर दंड मिल रहा है हमें सर। कोई और नाटक चुन लें।

कौल : है तो लाओ। कहाँ लिखे जा रहे हैं, अर्थपूर्ण नाटक। अपनी-अपनी राजनीति की रंडी बन गये हैं लेखक। हाथ में कलम नहीं, लाठी है, लाठी। हाँक ले जाते हैं सारे पात्रों को अपने फटे हुए पार्टी झण्डे के नीचे। दूसरी तरह के नाटक कर लो। रामायण-महाभारत की इण्डस्ट्री खुल गई है। लिखिए, मिथ पर लिखिए लेकिन उसे आज के जीवन से जोड़ें। मिथ को मेटाफर बनाएँ। लेकिन नहीं। हमारे यहाँ तो लेखकों को दौरा पड़ता है दौरा। पहले कबीर का दौरा पड़ा था, अब कर्ण का।

आई कैन नेवर स्टेज सच प्लेज आफ़ फाल्स मिथिकल वैल्यूज़।

बलवंत : सर, नाटकों में राजनीति नहीं होनी चाहिए।

कौल : हो, जरूर हो। लेकिन बाँस पर टँगे झण्डे वाली राजनीति नहीं। जीवन से जुड़ी पालिटिक्स। अब नहीं सहेंगे लोग आपके घड़े-घड़ाये नारे से निकलती राजनीति। समझदार हो गये हैं। सरकारें उखाड़ फैंकते हैं, नाटक की क्या औकात। छोड़ो, अपने नाटक की बात करें। रजत, पढ़ो तो स्पीच का आखिरी हिस्सा।

रजत : (फाइल खोलकर) एक जातक कथा सुनाऊँ आपको। भगवान बुद्ध प्रवचन दे रहे थे कि कर्मों के फल से कोई नहीं बच सकता। कभी नहीं बच सकता। तभी पहुँची वहाँ एक माँ गोद में लिये मृत शिशु। विलाप करती माँ ने भगवान बुद्ध से पूछा भगवान! मेरे बेटे ने दो दिन के जीवन में कौन से पाप कर लिये, कौन से कर्म कर लिये जो मिला है उसे मृत्युदण्ड। आप भगवान हैं तो कर दें जीवित मेरे बेटे को। एक माँ का सन्ताप तो भगवान भी नहीं सह सकते न। उनकी आँखों में आँसू और होंठों पर शीतल मुस्कान। बोले जाओ माँ, उस घर के चूल्हे से एक चुटकी राख ले आओ जहाँ आज तक कोई न मरा हो। कर दूँगा मैं जीवित तुम्हारे पुत्र को।

(एक बहुत बूढ़े आदमी का प्रवेश। सहारा देकर पत्नी कमरे में लाई। कौल आगे बढ़ा, हाथ पकड़ कुर्सी के पास लाया, बैठाया। बूढ़े आदमी का साँस फूली है— तेज-तेज साँस ले रहा है। पत्नी पास बैठी है। कौल

ने पानी का गिलास पकड़ाया।)

कौल : (सबसे) आप हैं इस नाटक के लेखक—श्री नवीन वर्मा।

(सबने नमस्कार किया।)

नवीन वर्मा : (हाथ जोड़कर अभिवादन का जवाब) पता चला आप मेरा नाटक कर रहे हैं। मन किया अपनी आँखों से देख लूँ अपने नाटक की रिहर्सल। चला आया आपके शहर में डॉक्टर के रोकने के बावजूद। कैसा लगा आप सबको मेरा नाटक?

(झिझकी चुप्पी) (पानी का घूँट पीकर)

नवीन वर्मा :—जानता हूँ बहुत अच्छा नहीं लगा होगा। दस नाटक लिख चुका हूँ। जीवन के इस अन्तिम पहर तक पहुँच गया हूँ। लेकिन एक का भी मंचन नहीं हुआ। आलोचक मूर्ख समझते हैं मुझे। अभी तक आदर्शों की लाश चिपकाए फिरता है अपनी छाती से। आदर्श इतने ग़ल्त क्यों हो गये हैं। भविष्य का जन्म होता है वर्तमान आदर्श के गर्भ से। शायद आप सबकी कृपा से देख पाऊँ अपना एक नाटक अन्तिम यात्रा पर जाने से पहले (उठता है)। आपको बुरा न लगे तो रिहर्सल देखने आ जाया करूँ। बहुत अच्छा लगेगा हमें। चलते हैं। आपकी रिहर्सल में रुकावट नहीं बनना चाहते हम।

(कौल ने सहारा दिया। पत्नी ने हाथ पकड़ा। सबने खड़े होकर नमस्कार किया।)

कौल : मैं आया। वर्मा जी को नीचे छोड़कर आया। (तीनों का एगज़िट। झिझकी चुप्पी)

राजीव : इनसे तो चला भी नहीं जाता।

महेन्द्र : बैठकर बोलते हैं तो भी साँस फूल जाती है।

बलवंत : लगता है बहुत दिन नहीं जियेंगे।

रजत : खुद तो मरेंगे, हमें भी मारेंगे। जरूर मारेंगे।

कान्ता : लेकिन बात तो ठीक कर रहे थे। आदर्श इतने ग़ल्त क्यों हो गये हैं। भविष्य का जन्म होता है वर्तमान आदर्श के गर्भ से....

(कौल का प्रवेश)

कौल : साँस फूल गई उनकी सीढ़ियाँ उतरते हुए। ही शुड नाट हैव लैफ़्ट हिज़ टाउन। देख लिया। अपनी आँखों से देख लिया आपने। कैसे कर देते हैं आलोचक हत्या उस लेखक की जो उनके गैंग का मैम्बर न हो। सत्तर साल की लम्बी उम्र है नवीन जी की। किसी ने नोटिस नहीं लिया। एक लाइन तक नहीं लिखी उन पर। क्योंकि उन्होंने सीढ़ी नहीं पकड़ी कभी किसी वाद की।

(सब चुप)

कौल : हमेशा किसी किताब को सिम्पथी के साथ एप्रोच करना चाहिए। एक हिस्सा और पढ़ देखते हैं। कान्ता, तुम पढ़ो वह लाइन जिनमें पत्नी गुस्सा खा रही है अपने आदर्शवादी पति से जो नाटकों के द्वारा समाज में सुधार लाना चाहता है।

कान्ता : कर दो बन्द हम सब को अपने आदर्शों की काल कोठरी में। एक निश्चित मृत्यु से पहले का आख़िरी कमरा। तुम्हारे आदर्श हम सब का बलिदान...

कौल : कान्ता, तुम एक प्रेमिका की तरह बोल रही हो। एक पत्नी की तरह बोलो। एक ऐसी पत्नी की तरह जिसे

परिवार की भूख ने इतना भयानक बना दिया है कि थियेटर उसकी सौत है, सौत। वह पति से इतनी नफ़रत नहीं करती जितनी थियेटर से। थियेटर इज़ हर ऐनेमी नम्बर वन।

महेन्द्र : कान्ता जी को क्या पता पत्नी कैसे बोलती है। शादी जो नहीं की अब तक।

कान्ता : तो तुम बता दो। तुम्हारी तो हो चुकी है।

महेन्द्र : भई मैं नहीं बता सकता। हमारी पत्नी का हमसे झगड़ा ही नहीं होता....

आवाजें : झूठ। बिल्कुल झूठ। बीवी और लड़ाई न करे। झूठ। बिल्कुल झूठ।

महेन्द्र : भई हम दोनों में परफैक्ट अण्डरस्टैंडिंग है। बड़े-बड़े फ़ैसले मैं करता हूँ , छोटे-छोटे वह....

बलवंत : कैसे? कौन से फ़ैसले !

महेन्द्र : भारत-पाकिस्तान सम्बन्ध कैसे सुधारे जायें, महँगाई कैसे रोकी जाये, अयोध्या में रामजन्म भूमि का मसला कैसे सुलझाया जाये, यह सब बड़े-बड़े फ़ैसले घर में हम करते हैं। छोटी-छोटी बातें–रंगीन टी. वी. कब खरीदना है, बच्चों को कौन से स्कूल में भरती कराना है, किस रिश्तेदार के घर जाना है, यह छोटे-छोटे फ़ैसले हमारी बीवी करती है। अब कैसे होगी लड़ाई।

(अचानक लाइट चली जाती है)

कौल : राजीव, देखो तो। सब की लाइट गई है या हमारा फ़्यूज़...।

महेन्द्र : हम थियेटर वालों का फ़्यूज़ तो हमेशा उड़ा रहता है।

कौल : बी सीरियस फार ए चेंज। इस नाटक में जोकर का कोई रोल नहीं। कुछ कैण्डल्ज़ ले आओ।

महेन्द्र : यस सर, भारत सरकार की तरह गया और भारत सरकार की तरह आया।

दृश्य-2

(जलती मोमबत्ती के साथ एक औरत का प्रवेश)

(रजत का घर। सिर झुकाये कुर्सी पर बैठा, गुस्से में तमतमाई सामने खड़ी पत्नी, एकदम गुस्से में)

मीना : मार दो भूखा हम सबको, कला के नाम पर। करते रहो थियेटर। और कुछ नहीं तो एक लम्बी रस्सी ला दो। चार लोगों को फाँसी लगाने के लिए लम्बी रस्सी। हर रोज़ की भूख से तो लम्बी रस्सी सस्ती भी है और सुखद भी। (लाइट आ जाती है।)

रजत : मीना ! थोड़ा धीरे बोलो। सब जाग जायेंगे।

मीना : जाग जायेंगे। सोया ही कौन है कि जाग जायेगा। सुना है कभी कि भूखे पेट नींद आती हो। दानवीर कर्ण। करते रहो स्टेज पर दान अपने कवच-कुण्डल। भगवान के लिए महीने के आखिरी दिन याद रखा करो। चावल लाने का वचन तो निभा दिया होता। बर्तन माँजने वाली माई से पैसे माँगे और लाई चावल।

रजत : न माई पराई है और न पैसे माँगना नई बात। पैसे उधार लिये हैं तो लौटा देंगे। इसमें गुस्सा खाने की क्या ज़रूरत ।

मीना : मेरी ग़ैरत। मेरी इज़्ज़त। मेरा आत्मसम्मान। अब रोटी के लिए नौकरों से पैसे माँगूँगी। नौकरों से।

रजत : किसी अमीर से माँगती तो क्या पदमश्री मिल जाता।

लिये हैं तो लौटा देंगे।

मीना : तुम्हें रत्तीभर शर्म नहीं आती। इतने बड़े अभिनेता, थियेटर के ठेकेदार रजत साहब की पत्नी नौकरानी से पैसे माँगे। खिला नही सकते तो क्यों की थी शादी।

रजत : माई से उधार और शादी की क्या तुक बनी। कहीं तुमने अकविता लिखनी तो शुरू नहीं कर दी। शादी इसलिए की थी कि तुम भी मुझसे शादी करना चाहती थीं। कोई भगाकर नहीं लाया। सात फेरे लिये हैं। पूरे सात।

मीना : तुम ! तुम भगा लाते और मुझे ! कहीं पृथ्वीराज चौहान का कोई डायलाग तो याद नहीं आ गया। मंच और जीवन में अन्तर होता है। बहुत बड़ा और घिन्नौना अन्तर। लेकिन तुम्हारा भी क्या कसूर। न अपना जीवन और न अपनी सोच। इतिहास के मृत पात्रों ने कर लिया है कब्ज़ा तुम्हारी आत्मा पर। मुझसे तो छोटी बहन स्यानी निकली। माँ-बाप की मरज़ी से शादी की। राज कर रही है राज। जानते हो क्या कहा था माँ ने जब तुमसे शादी की ज़िद की थी–स्याना कौआ हमेशा गंदगी पर बैठता है।

रजत : जरूर कर रही होगी राज, मिल्ट्री जी से शादी करके। बिस्तरे में भी परेड करती होगी। यार। ठंडी हो जा। बेचारी बहन को क्यों खींच रही हो इस मैदाने जंग में।

मीना : जिंदगी कोई नाटक नहीं जिसकी लाइनें हिसाब-किताब से बोली जायें, एक सिलसिले में। लेकिन तुम। तुम कैसे समझोगे यह बात। न तुम्हारा जीवन अपना न तुम्हारी भाषा अपनी। माँगी हुई जिंदगी जीते हो, फिर क्यों नहीं

बोलोगे माँगे हुए संवाद। सच कोई नाटक नहीं, कोई स्टेज नहीं जो बदल जाये तुम्हारे चाहने से। सच शादी है। सच है परिवार। और सच है मीना, मीना। माई से उधार माँगती मीना।

रजत : इतनी ही परम ज्ञानी थी, सच का इतना गहरा ज्ञान था तो नहीं करनी थी शादी मुझसे।

मीना : सच तब केवल देह तक सीमित था। आयु के उस दौर में लड़कियों को तकिये से लिपटकर सोने में भी आनन्द आता है। उस उम्र में लड़कियाँ दिमाग से नहीं सोचतीं शरीर से सोचती हैं। केवल शरीर से। शरीर के कुछ मिन्टों का आनन्द बन जाता है उनके लिए जीवन का अन्तिम आनन्द। और तब रोती रहती हैं सारी ज़िन्दगी। भीख माँगने के लिए हमेशा उठे हाथों वाली कमीनी जिंदगी।

रजत : और प्रेम। नौकरी तो मैं शादी से पहले भी नहीं.....।

मीना : मत बोलो यह शब्द प्रेम। गाली है, गलीज गाली। सिनेमा हाल के अँधेरे में हाथ पकड़कर बैठना मेरे लिए प्रेम था। पार्कों में मिलना मेरे लिए प्रेम था। तुम्हारे किसी दोस्त के बिस्तरे में तुमसे लिपटकर लेटना मेरे लिए प्रेम था। डू नाट अट्टर दिस वर्ड। आई हेट इट, हेट इट। दस सालों में जितनी बार तुम्हारे साथ सोई, अगर दूसरे मर्दों के साथ लेटती तो अपनी कोठी होती, अपनी कार होती। जानते हो अर्थ एक आदमी से प्रेम का। किराये का मकान और बदबू भरी ज़िंदगी। लव इज़ ए बल्डी मिसअण्डरस्टेडिंग बिटवीन टू फूल्स।

रजत : डू नाट बी वल्गर। कोई अन्तर नहीं तुम्हारे लिए एक वेश्या और पत्नी में।

मीना : है। अन्तर है। पत्नी के पास लाइसेंस है एक आदमी के साथ सोने का और बन जाती है घर में धोबिन, सफाई करने वाली माई, रोटी पकाने वाली नौकरानी और बच्चे पैदा करने वाली मशीन। और वेश्या मटकती फिरती है फाइव स्टार होटलों में। मत करो बार-बार शादी की बात। ए बल्डी लाइसेंस्ड प्रास्टीच्यूशन ।

रजत : कुछ पैसे हैं, सिगरेट खत्म.......

मीना : भूल गये अगली लाइन और आ गये याद सिगरेट। कैसे मर्द हो तुम कि गुस्सा भी नहीं आता। मुझे मार भी नहीं सकते। ठीक कहते हैं लोग। औरतों की कमाई पर जीने वाले मर्द की आत्मा नपुंसक हो जाती है। एक भड़ुवा। एक पिम्प। झगड़े के बाद तो तुम हमेशा एक्साइटेड हो जाते हो। उतारूँ कपड़े (ब्लाउज का कन्धे वाला बटन खोलकर) रजत साहब आप पहले सिगरेट पियेंगे या मेरे साथ लेटेंगे। मेकअप यूअर माइंड, यू बल्डी ग्रेट स्टेज एक्टर।

(खुले दरवाजे से लड़का अन्दर आया, रजत के पास बैठा। लड़का अँधेरे में प्रवेश करेगा, उसे चलता हुआ बिल्कुल नहीं दिखाना है अभी)

अंगद : पापा ! नया नाटक शुरू हो गया। मुझे रिहर्सल में क्यों नहीं ले गये?

रजत : कौल अंकल ने अभी रिहर्सल शुरू नहीं की। कल से होगी। साथ ले चलूँगा।

अंगद : प्रॉमिस पापा। लेकिन आप दुर्योधन का रोल मत करना। लड़के मुझे बाद में छेड़ते हैं।

मीना : बेटा, तुम्हारे पापा क्या करेंगे दुर्योधन का रोल। इनके पास तो देने के लिए कभी सुई की नोक तक नहीं रही। पाँच गाँव तो दूर की बात है।

अंगद : ऐसे थोड़ा बोलते हैं मम्मी। पापा आप बोलकर दिखाओ।

रजत : क्यू दो।

अंगद : पापा, युद्ध से....

रजत : अरे बाबा, पापा नहीं। दुर्योधन।

अंगद : दुर्योधन। और कुछ नहीं दे सकते तो पांडवों को पाँच गाँव ही दे दो। युद्ध से डरो।

(रजत ने पीठ मोड़कर मुँह पर दोनों हाथ रखे। मुड़ा। शरीर आक्रमण की मुद्रा में, आँखों में घोर गर्व। यह संवाद वह पारसी थियेटर शैली में बोलेगा।)

रजत : तू भगवान होगा उन भिखारी पांडवों के लिए। बाँसुरी बजाओ और करते रहो रासलीला गोपियों के संग। काँप से गये युद्ध के नाम से। उठाई है कभी तलवार, पता है इसका वज़न। युद्ध से डराते हो और मुझे कहते हो पाँच गाँव तो क्या सूई की नोक के बराबर भी जमीन नहीं दूँगा।

(अंगद ने ताली बजाई।)

मीना : मत रोपो अपने सड़े हुए सपने मेरे बेटे के दिल में। क्या इसे भी अभिनेता बनाना चाहते हो। न चैन से जीये और न चैन से जीने दे।

अंगद : चैनपुर की दास्तान। पापा। चैनपुर की दास्तान का

सीन करके दिखाओ न, जब आदमी पेड़ बन जाता है।

रजत : भई वह सीन नहीं हो सकता। मैं कहानी सुनाऊँगा तो उछलेगा कौन। दो-तीन लोग तो चाहिए न।

अंगद : मम्मी आप करो न, उछलने वाला सीन मेरे साथ।

मीना : न बाबा, मुझे नहीं आती एक्टिंग।

रजत : मान जाओ यार। अंगद के लिए मान जाओ।

(मीना के साथ अंगद खड़ा होगा। रजत रात वाली कहानी सुनाने का रोल करेगा और 'धत्त तेरे की' कहते हुए अंगद एक टाँग पर उछलेगा, क्योंकि वह लँगड़ा है।)

रजत : हम शाम को बाग में घूम रहे थे।

अंगद,मीना : (आगे उछलकर) अच्छा।

रजत : पेड़ से एक खत गिरा।

अंगद,मीना : (उछलकर) अच्छा।

रजत : आदमी पेड़ बन गये थे।

अंगद,मीना : (पीछे उछलकर) धत्त तेरे की।

रजत : पेड़ हमसे बात करना चाहते थे।

अंगद,मीना : धत्त तेरे की।

रजत : हमने उनको मिलने का टाइम दिया।

अंगद,मीना : (आगे उछलकर) यह बहुत हो गया।

रजत : (गुस्से में) क्या हम झूठ बोल रहे हैं।

(अंगद ने तालियाँ बजाईं, मीना ने सहारा दे कुर्सी पर बैठाया। वह ज़ोर से हाँफ रहा है।)

मीना : अंगद, उछलने से टाँग में दर्द तो नहीं हुआ।

अंगद : (हाँफते हुए) नहीं मम्मी, बिल्कुल नहीं। मुझे तो याद

ही नहीं रहा कि मेरी टाँग खराब है। (रजत की तरफ मुड़कर) पापा, मुझे बीन ले दो।

रजत : बीन। भई यह बीन का क्या करोगे?

अंगद : बजाऊँगा। जो लँगड़े होते हैं बीन बजाते हैं।

रजत : किसने कहा तुमसे?

अंगद : (डरी आवाज़ में) पापा। स्कूल में मुझे लँगड़ाकर चलते देख सारे लड़के गाना गाते हैं--लंगड़दीन बजाए बीन।

(रजत ने जलता सिगरेट फर्श पर फेंका। लगातार जूते से मसला।)

मीना : अंगद। जाओ। कपड़े बदल लो। दादा जी आने वाले हैं। खाना खायेंगे।

(अंगद का लँगड़ाकर चलते हुए एग्ज़िट। मीना ने डिब्बी से सिगरेट निकाला, रजत का झुका सिर उठा उसके होंठों में लगाया। माचिस पकड़ाई। उसने जलाकर लम्बा कश खेंचा।)

मीना : तुम बच्चे के सामने हमेशा हौसला क्यों खो देते हो। स्कूल में लड़के एक-दूसरे को छेड़ते ही हैं।

रजत : (उसके पास खड़ा होकर) मैं कुत्ता हूँ। मैं नामर्द हूँ। मैं हरामज़ादा हूँ। तुम मारती क्यों नहीं मुझे। मारो।

(उसके दोनों हाथ पकड़ उनसे लगातार अपने मुँह पर थप्पड़ लगाता है। वह झटके से हाथ छुड़ा उसे कुर्सी पर बैठाती है। सिर अपने पेट से लगा उसकी हिलती पीठ पर हाथ फेरती है।)

मीना : डू नाट क्राई रजत। प्लीज़ डू नाट क्राई। फार गॉड्स सेक, बी ब्रेव। (रजत ने मुँह उपर उठाया, मीना ने

साड़ी से पोंछा। उसी समय रजत के रिटायर्ड पिता का प्रवेश।)

पिता : क्या हुआ? क्या हुआ रजत को?

मीना : कुछ नहीं हुआ पापा। रजत साहब की आँख में शायद तिनका पड़ गया। निकाल रही थी।

पिता : (रजत से) भई तिनका पड़ा है तो आँखों पर पानी के छीटें मारो। इतने बड़े हो गये और इतनी भी अकल नहीं।

(रजत का एग्ज़िट)

पिता : न हवा चल रही है, न धूल उड़ रही है। यह तिनका रजत को तलाशता कमरे में कैसे आ गया। कहीं तुमने तो कुछ .....

मीना : कुछ नहीं कहा मैंने आपके लाड़ले बेटे को। अंगद को स्कूल में लड़कों ने लँगड़ा कहकर छेड़ा। उसने रजत साहब को बताया और.....

पिता : बेटा जी, किसी दिन कुछ हो जायेगा रजत को। आदमी को जब बाहर मार पड़ रही हो तो घर में उसे सहलाना चाहिए। मैं जानता हूँ अच्छी तरह अपने बेटे को। वह सख्त होने का बहाना करता है। ही एक्ट्स टफ़। जन्म से सेंसीटिव है। सारी मार खा लेगा। लेकिन शब्दों की मार नहीं सह पाता। छोड़ो। जब तुम कहती हो तो आँख में तिनका ही पड़ा होगा **(जेब में हाथ डाल लिफाफा उसकी तरफ बढ़ाया)** कुछ रुपये हैं। रख लो।

मीना : रुपये। अभी तो पहली तारीख....

पिता : जिस फैक्ट्री के एकाउंट्स देखता हूँ उन लोगों ने बोनस बाँटा है। जितना लाभ उतनी खुशी। वकर्स के साथ मुझ पार्ट टाइम वर्कर को भी बोनस दिया है इस बार।

मीना : क्या किस्मत है आपकी। रिटायर होने के बाद भी आराम नहीं। सवेरे होते ही थैला उठाया और निकल पड़े स्कूलों-फैक्टरियों के एकाउंट्स लिखने।

पिता : बेटा जी। सुना है कभी कि कोई काम करने से मरा हो। सुस्ती शरीर का सबसे बड़ा शत्रु है। काम नहीं करूँगा तो चारपाई पर पड़ा खाँसता रहूँगा।

मीना : भूल गये आप अपने बेटे को यह सीख देना। क्या शानदार है उसका जीवन। कमाये कोई, खाये कोई।

पिता : शरीर का काम हमें इतना नहीं थकाता जितना मन का, सोचने का। ज़रा सोचो तो। एक जीवन के दुख झेलना कठिन है और कितने सारे दुख झेलने पड़ते हैं रजत को। अंधा हो गया राजा इडिपस और अंधड़ में भटकता पागल किंग लियर। कभी कर्नल सूरत सिंह और कभी गोदो की इन्तजार में खड़ा रजत। बाने कौन से जन्म का अभिशाप बना देता है मंच का अभिनेता। और कोई भी तपस्या नहीं दिला सकती मुक्ति इस दैवी अभिशाप से।

(अंगद का प्रवेश। एक पाँव फर्श पर पटककर रखता है।)

अंगद : लंकेश ! है कोई वीर जो मेरा पाँव उठा सके।

पिता : (नीचे झुककर) मैं हूँ मेघनाद। तेरा पाँव तो क्या तुझे उठाकर लंका से बाहर फैंक दूँगा।

अंगद : (छेड़ती आवाज़) अरे बूढ़े। पहले ताकत के टीके लगवा नहीं तो फिल्म एक्टर जितेन्द्र की तरह प्लस थर्टी की गोलियाँ खा।

पिता : यार अंगद। यह गलत बात है, जब चाहे संवाद बदल देते हो। अब दूसरा एक्टर क्या खाक बोलेगा।

अंगद : दादा जी। उस दिन कौल अंकल रिहर्सल में समझा रहे थे। अच्छा एक्टर इम्प्रोवाइज़ कर लेता है जब कुछ भूल जाये। यह इम्प्रोवाइज़ क्या होता है—जो जी चाहे बोल दो।

पिता : नहीं गुरू। जो जी चाहे कभी नहीं बोलते। क्या बोला था आज पापा को?

अंगद : कुछ नहीं दादा जी। टाँग मेरी खराब है, और गुस्सा पापा को आता है।

पिता : पता है रजत ने तुम्हारा नाम अंगद क्यों रखा। उसके एक पाँव में इतनी ताकत थी कि लंका का कोई सूरमा हिला तक नहीं सका। भगवान कोई बेवकूफ है कि हमें दो हाथ, दो पैर, दो आँखें और दो कान दिये हैं। एक खराब हो जाये तो क्या डरना। दूसरा जो है।

अंगद : (पाँव पटककर) उठा रावण, तू उठा। एक कमजोर औरत को उठाकर योद्धा बन गया। उठा एक मर्द का पाँव।

(रजत दरवाजे पर खड़ा यह संवाद सुनता है। बेटे का हाथ पकड़ कुर्सी पर बैठाता है।)

रजत : यार अंगद। तू अमिताभ बच्चन की फिल्में कम देखा कर। जब देखो तब गरजता हुआ। जो जी में आया बोल दिया। क्या खाक बनेगा एक्टर। संवाद तो याद नहीं रहते। रावण जब पैर उठाने के लिए उठे तो अंगद उसे रोकेगा। यह फिल्मी मर्द-वर्द कहाँ से आ गया बीच में।

अंगद : (सोच में) मुझे संवाद भूल क्यों जाते हैं?

पिता : यार अभी तू छोटा है। छोटे-छोटे संवाद याद कर। अपने पापा की तरह मीलों लम्बी स्पीच बोलना अभी तुझे नहीं आयेगा।

(कौल दरवाजे में खड़ा यह बातें सुन रहा है। रजत उसकी तरफ देख मुस्काया।)

रजत : आप कब आये कौल साहब?

कौल : भूख लगी और आ गये। अंगद, देख तो रसोई में कोई केला-वेला पड़ा है। **(अंगद का एग्जिट)**

मीना : कौल साहब खाना खायेंगे?

कौल : न जी। टप्पे खायेंगे। तुम दस साल से रजत के साथ रह रही हो। यह छोटा-सा सच भी नहीं समझ सकीं कि थियेटर वाले जब आते हैं तो खाना खाकर जाते हैं। फिर हमारी आधी बीवी आज बीमार है।

पिता : यह आधी बीबी क्या हुआ कौल साहब?

कौल : फ्रिज बाऊजी, फ्रिज। खाना बनाओ और भर दो। खाते रहो मजे में दो-तीन दिन। अब पत्नी का मुख्य कर्तव्य रोटी खिलाना है कि नहीं। फ्रिज बना बनाया खाना..।

पिता : लेकिन यह आधी बीवी........।

कौल : बस रोटी ही मिलती है बाऊजी। आप फ्रिज के साथ लेट तो सकते नहीं। हुई न आधी बीवी।

पिता : तुम थियेटर वाले बदमाश हो। कहाँ की बात कहाँ जोड़ लेते हो।

मीना : खाना ज़रा देर से मिलेगा। अभी तो.....

कौल : देख लिया। अपनी आँखों से देख लिया। घर में शायद

महाभारत हो रहा था और जमा रहा था रजत अपनी एक्टिंग की धाक। तभी तो अंगद को किचन से केला लाने के लिए कहा।

(शोभा का प्रवेश। हाथों में कुछ लिफाफे। लहराकर स्टेज पर आयेगी।)

शोभा : यूनाइटेड ने कर दिया कमाल, मिली तरक्की हुए खुशहाल। खाये जाओ, खाये जाओ, यूनाईटेट के गुण गाए जाओ।

मीना : इतना सारा सामान। अभी तो......

शोभा : मीना भाभी जी, मैं भारत सरकार की नौकरी करती हूँ, भारत सरकार की। किसी नत्थूखैरे की नहीं। आज दिवाली का फेस्टीवल एडवांस मिला है। खाये जाओ, खाये जाओ। यूनाइटेड ने कर दिया कमाल.....

कौल : शोभा, औरतों की अकल ऐड़ी में होती है। मुर्गा ले आई और उसकी बहन मदिरा भूल गई। अब अकेले भाई को खाने में खाक मज़ा आयेगा।

शोभा : लाई हूँ कौल साहब, मदिरा भी लाई हूँ। मुझे पक्का पता था आप यहाँ होंगे। शहर में किसी परिचित के पास पैसे हों और आपको खबर न लगे।

मीना : शोभा। तुम भाई-बहन को पैसे से पैदायशी दुश्मनी क्यों है। आये नहीं कि उड़ाये। कुछ जोड़ो। कुछ बचाओ। अपना घर नहीं बसाना क्या। रिटायर्ड पिता की तरह तुम भी सारी उम्र कमाती रहोगी अपने पैरासाइट भाई को खिलाने के लिए। जिस उमर में लड़कियाँ हाथों पर मेंहदी लगाती हैं, तुम सिर पर लगाती हो। बूढ़ी और बदसूरत हो जाओगी वक्त से पहले। मेरी तरह, बिल्कुल

मेरी तरह।

शोभा : मीना! तुम्हें रजत भाई साहब से लड़ना हो तो लड़ो। डूनाट मेक माई मैरिज एन एक्सक्यूज फार क्वरल। तुमने तो देख, सुनकर, अपनी मरजी से शादी की थी। बैठी हो झूले में। हम लोगों को खुश देखकर तुम्हें हमेशा गुस्सा क्यों आ जाता है?

मीना : भिखारी बना दिया है मुझे तुम्हारे भाई ने, भिखारी। पति के जीते जी जो पत्नी उसके रिटायर्ड पिता की कमाई खाये, उसकी क्वारी बहन की कमाई खाये और खुश रहे, हँसती रहे। मैं बदज़ात तो एक विधवा से भी बदतर हूँ। जिन्दगी के हर कदम पर लगातार अपमानित होती एक बेग़ैरत औरत।

रजत : कभी तो मीठा बोल लिया करो। तुम औरत हो कि हथियार बनाने का कारखाना।

मीना : धन्य हो तुम ! जी चाहता है तुम्हारी आरती उतारूँ, जय जयकार करूँ। किस भगवान ने बनाया है तुम्हें। किस मिट्टी से बनाया है। भिखारी से करते हो गुलाब के फूल की बातें। मिठास और सुगन्ध की आशा रखते हो और मुझसे।

(दादा के साथ अंगद का प्रवेश। मेज पर रोस्टेड चिकन देखकर उछला)

अंगद : मैं टाँग खाऊँगा दोनों टाँगें खाऊँगा।

मीना : खाओ बेटे। दोनों टाँगें खाओ। शोभा दीदी ने भीख डाली है, बाप-बेटा मजे उड़ाओ ।

अंगद : मम्मी, जब भी पे मिलती है शोभा दीदी मेरे लिए चिकन

लाती हैं। लेग्ज़ हमेशा मैं खाता हूँ। आज भी खाऊँगा।

पिता : तुम लोग खाना शुरू क्यों नहीं करते। बस यही खराबी है तुम थियेटर वालों में। बोलते जाओगे। बोलते जाओगे। यू पीपल आर इन लव विद यूअर वायस **(सबको मौन, गम्भीर देखकर)** कौल साहब। आप अपनी चीज़ शुरू करें। अब इसके आगे बेचारे खाने की क्या औकात।

रजत : आप सब खायें। मुझे भूख नहीं।

शोभा : भूख नहीं। क्यों भूख नहीं। भर गया होगा पेट मीना भाभी की गालियों से।

मीना : शोभा। बीहेव यूअरसेल्फ। गालियाँ दूँगी और मैं, रजत साहब को। रजत दि ग्रेट एक्टर.....

कौल : मीना प्लीज़......

मीना : क्यों घूमता है यह सारा घर रजत के आसपास। पिता रिटायर होने के बाद भी काम करते हैं, रजत साहब कलाकार के लिए। बहन आयु का सबसे सुन्दर हिस्सा मास्टरी में बरबाद कर रही है ताकि रजत साहब टाँग पर टाँग धरकर बैठें।

अंगद : टाँग। मैं टाँग खाऊँगा। दोनों टाँगें।

(रजत झटके के साथ उठा। अंगद की कमीज़ का गला पकड़ा। अपनी तरफ खींचा)

रजत : हरामजादे। तेरी अपनी एक टाँग और तू दोनों टाँगें खायेगा। साले लँगड़े.......

(शोभा मारने के लिए उठा उसका हाथ पकड़ती है)

अंगद : पापा, मत मारो। मैं टाँग नहीं खाऊँगा। मत मारो पापा। अब मैं बीन नहीं माँगूँगा।

(रजत ने उसकी कमीज छोड़ी, मेज का कोना पकड़ उसे उल्टा दिया। खाने का सारा सामान नीचे गिर गया)

रजत : मैं दूँगा तुझे बीन **(उसकी तरफ झपटा)**।

पिता : **(अंगद को साथ चिपकाकर)** चलो बेटे अंगद, अपने कमरे में चलें। तुम्हारे पापा आज पागल हो गये हैं। शोभा, तुम भी अन्दर चलो। झगड़ने दो इन जानवरों को, नोचने दो इन्हें एक-दूसरे का मांस।

शोभा : **(दरवाजे के पास पहुँचकर)** मीना तुम ने एक बच्चे को भूखा रखा। तुम माँ हो कि डायन। लिखकर रख लो मेरी बात। खाओगी भी तुम मेरे भाई को या अपने बेटे को।

(पिता, अंगद, शोभा, मीना का एग्जिट। छोटी चुप्पी)

रजत : कौल साहब मैं नौकरी करूँगा।

कौल : देखो रजत........

रजत : **(ऊँची आवाज)** मैं नौकरी करूँगा।

कौल : कर लेना। रिलेक्स......

रजत : **(चीखकर)** मैं नौकरी करूँगा......

कौल : **(खड़ा हुआ, दरवाजे पर रुका)** ठीक। लोक सम्पर्क विभाग में डिप्टी डायरेक्टर ड्रामा की पोस्ट निकली है। एप्लाई कर दो। दस तारीख को इंटरव्यू है। कमिशनर कल्चर मुझे जानता है। आई एम वन आफ दा एक्सपर्ट इन दा इंटरव्यू। मिल जायेगी तुम्हें यह नौकरी। यू बल्डी बास्टर्ड। तुमने अंगद को मारा। आई विल गैट यू दिस बल्डी जाब।

(मंच पर फैलता अँधेरा)

रजत : **(मरी आवाज में)** मैं नौकरी करूँगा।

अंक-2

[इंटरव्यू का कमरा]

अफसर 1: शर्मा साहब लेट हो गये। प्रत्याशी तीन घंटे से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अफसर 2: किशोरचन्द शर्मा कलचर कमिशनर ही नहीं अंग्रेजी कवि भी हैं। आ गई होगी कोई इन्सपोरेशन। सुनो, उनके सामने इतनी शुद्ध हिन्दी मत बोला करो। कान्फीडेंशल रिपोर्ट खराब कर देंगे। ब्राउन साहब हैं, ब्राउन साहब। **(शर्मा का प्रवेश। बढ़िया कपड़े। दाँत थोड़ा बाहर निकले हुए, लगातार जीभ होंठों पर फेरेगा। शुद्ध अंग्रेजी लेकिन अटपटा हिन्दी उच्चारण)**

शर्मा : शुरू करें इन्टरव्यू। बदरी कौल नहीं आये अभी तक। ही इज़ एक्सपर्ट। इज़न्ट ही।

अफसर 2: यैस सर। कौल साहब को आये तीन घंटे हो गये। आप थोड़ा लेट थे इसलिए कैन्टीन में चाय........

शर्मा : अब आप सिखायेंगे हमें टाइम की पाबन्दी। काल हिम। शो मी द लिस्ट आफ कैन्डीडेट्स।

अफसर : सर दस प्रत्याशी.........

शर्मा : वट्स दिस परताशी, कितनी आसान वर्ड है कैन्डीडेट्स।

आप जैसे लोगों के हिन्दी परेम ने लोगों को इस लैंगूएज का दुश्मन बना दिया है। लुक एट मी। अंग्रेजी में लिखता हँ, कलचर का कोई डेलीगेशन फ़ारेन जाये, सरकार मुझे जरूर भेजती है। व्हाई? ताकि दूसरे देश के आरटिस्टों से कोई तो बात कर सके। लीव इट। आप हिन्दी वाले नहीं समझ सकेंगे। काल कौल। **(लिस्ट देखकर)** सबसे ज्यादा क्वालीफाइड कौन कैन्डीडेट है।

अफसर 1: सर अनुभव और शिक्षा......

(शर्मा ने उसे घूरा)

अफसर 2: सर एक्सपीरियेंस और एजुकेशन तो कैन्डीडेट रजत....

शर्मा : रुक क्यों गये। एक ही सैन्टेंस में पूरी बात बतायें।

अफसर 2: लेकिन एजुकेशन मिनस्टर का फोन आया था, वसुन्धरा के......

शर्मा : मुझे भी आया था। लेकिन चुनेंगे हम बैस्ट कैन्डीडेट.. **(कौल का प्रवेश। शर्मा ने उठकर उससे हाथ मिलाया, साथ वाली कुर्सी पर बैठाया।)**

शर्मा : बहुत कम रेमुनेरेशन दिया जाता था आप एक्सपर्ट्स को। हमने दो सौ से पाँच सौ करवा दिया।

कौल : शर्मा साहब, आप तो अन्नदाता हैं हम कलाकारों के।

शर्मा : आपकी छेड़-छाड़ की आदत नहीं गई। भई हम क्या हैं आप लोगों के बिना। नथिंग। आप जैसों ने ही देश के कलचर को अलाईव रखा है। काश, थोड़े से और आई. ए. एस. अफसर कलचर प्रेमी हो जायें, मिरेकल हो जायें मिरेकल। याद है, आप को राजधानी में जब हमने

कलचर-फेस्टीवल करवाया था। खुद लेट प्राइमनिस्टर ने कहा था—काश शर्मा जी जैसे कुछ और अफसर...। छोड़िये। व्हाई लिव आन इम्पासीबल ड्रीम्ज़। **(अफसर से)** बुलाइए। पहला कैन्डीडेट बुलाइये।

(कटे बालों, मोहक चाल, मीठी आवाज़ वाली वसुन्धरा का प्रवेश। अभिजात्य वर्ग, क्लास वाली हिन्दी बोलेगी—कान्वेन्टनुमा। सवाल कोई भी पूछे, जवाब शर्मा की तरफ देखकर देगी।)

वसुन्धरा : गुड मार्निंग सर। गुड मार्निंग एवरी बाडी।

शर्मा : डिप्टी डायरेक्टर थियेटर की पोस्ट के लिए आई हैं आप। डिपार्टमेंट की बहुत सारी एक्टीवीटीज हैं—डांस, कवि-सम्मेलन, ड्रामा, फारेन से आये गेस्ट कलाकारों की देखभाल, वगैरह वगैरह। कर लेंगी आप यह सब काम?

वसुन्धरा : कोशिश करूँगी सर। फिर आप जैसे कलाप्रेमी आफ़ीसर की हमें गाइडेंस भी तो मिलती रहेगी।

कौल : क्या अनुभव है आपका इस फील्ड में?

वसुन्धरा : सर। मैं फैस्टीवल आफ इण्डिया में इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी जा चुकी हूँ। नाऊ आई हैव ए वाईडर एक्सपीरियंस आफ दी वर्ड आफ आर्ट।

कौल : क्या भूमिका रही आपकी इन उत्सवों में?

वसुन्धरा : रंगा-रंग कार्यक्रम।

कौल : मतलब?

वसुन्धरा : रंगा-रंग कार्यक्रम मीन्ज़ रंगा-रंग कार्यक्रम। डांस,

म्यूजिक, भँगड़ा, लोकगीत, एटसेस्ट्रा, एटसेस्ट्रा। आई कुड रियली एन्टरटेन द पीपल।

कौल : येस। आय एम श्योर यू कुड।

शर्मा : कुछ क्रिटिक्स कहते हैं हमारा देश गरीब है। यह फैस्टीवेल्ज बन्द कर देने चाहिए। वाट डू यू थिंक?

वसुन्धरा : सर लेफ़्टिट्स की यही प्राबलम है। किसी और को काम करता देख जल जाते हैं। दे थिंक आर्ट एंड कल्चर इज़ देयर पर्सनल प्रापर्टी। जो कुछ क्लैसिक हैं इन्हें पसंद नहीं। दे थिंक आर्ट मीन्ज ओनली पालिटिक्स। पिछले कुछ सालों से हमारे देश के आर्ट की सारे वर्ल्ड में धूम मच गई है। व्हाई। आन अकाउंट आफ सच फैस्टीवल्ज, इनसे हमारी माइंड एन्रिच होती है, एक्सपीरियेन्स ग्रो करता है।

शर्मा : इट श्योरलो डज़। जान डन्न सेज—नो मैन इज़ एन आईलैंड इन हिमसेल्फ......

वसुन्धरा : सर। आपको तो इंगलिश पोयट्री की इतनी नालेज है। फन्टासटिक।

शर्मा : (एकदम खुश) आई डिड माई मास्टर्ज इन इंगलिश फ्राम हारवर्ड। आई. ए. एस. में टाप किया। लेकिन फैसला किया, कला और कल्चर के लिये काम करना है। हिन्दी में तो सब लिखते हैं। अंग्रेजी में पोयट्री लिखता हूँ ताकि वर्ल्ड वालों को पता चले कि इंडिया के लोग भी इंगलिश में लिख सकते हैं।

कौल : बहुत बड़ा एहसान किया आपने हिन्दी पर।

वसुन्धरा : आई आलवेज़ रीड योअर राइटिंग सर। सम डे यू विल गेट नोवेल प्राईज़। आपने तो वर्ड्ज़ और ट्रीज़ पर इतनी कविताएँ लिखी हैं। आदमियों पर तो सब लिखते हैं। बट योअर कन्सर्ज़ हैव ट्रान्सेडिड मैनकाईंड।

शर्मा : आपको अच्छा लगता है पोयट्री पढ़ना। हू आर योअर फेवरिस्ट पोयट्स ?

वसुन्धरा : सर माईंड मत करें। आपके बाद टी.एस. एलियट मेरा फेवरेट पोयट है। सम हाऊ आर अदर हिन्दी पोयट्री गोज़ ओवर माई हैड।

शर्मा : अरे, हम क्यों माईंड करने लगे। अपनी लाइक्रिंग। **(कौल से)** आप पूछिए, अगर कुछ पूछना हो।

कौल : स्तानस्लावस्की की कुछ थियोरीज़ है एक्टिंग को लेकर। कुछ बताएँगी आप?

वसुन्धरा : सर। मैं एक परफारमिंग आर्टिस्ट हूँ। आई डोन्ट बिलीव इन थ्योरीज़ बट इन प्रैक्टिकल। आप जैसे फेमेस डायरेक्टर्ज की नालेज हमारे पास कहाँ। आप पढ़ाते हैं, सिखाते हैं। बट वी परफार्म।

शर्मा : **(दोनों अफसरों से)** भई आप लोग भी कुछ पूछिए। पत्थर क्यों बने बैठे हो।

दोनों अफ़सर : नहीं सर। आप के होते......

शर्मा : पूछिए। सामान्य ज्ञान के ही सवाल पूछिए।

अफ़सर : हमारे पहले प्रधान मंत्री की बेटी का नाम......

वसुन्धरा : मिसेज इन्दिरा गांधी।

अफ़सर 2: शेक्सपीयर की किसी फेमेस ट्रेजडी......

वसुन्धरा : हेमलेट एंड किंग लीअर।

दोनों अफ़सर : गुड। वेरी गुड। आपका सामान्य ज्ञान बहुत अच्छा है।

कौल : आपने किन नाटकों में काम किया है?

वसुन्धरा : सर आपको बुरा लगेगा, लेकिन मैं सिर्फ क्लासिक प्लेज़ में एक्ट करती हूँ। इडियस में बनी थी मैं किंग की माँ और वाईफ दोनों। द प्लैज़र आफ स्लीपिंग विद द सन् अल्टीमेटली बीकमस ए हाट-रेनडिंग टार्चर। कुछ बोल्ड किस्म के नाटकों में भी एक्ट कर चुकी हूँ। हमने बहुत प्रोग्रेस कर ली है। वी मस्ट कम आउट आफ द ऐज़ एंड प्रोबल्मज़ आफ लाईफ डिस्क्राइबड बाय प्रेमचन्दा.....

कौल : प्लीज़ लीव आउट पूअर प्रेमचन्दा–किसी नाटक का सीन....

शर्मा : नाटक छोड़िए कौल साहब। लोक सम्पर्क डिर्पाटमेण्ट में नाटकों के अलावा और भी बहुत से काम करने होते हैं। **(वसुन्धरा से)** उस क्लासिकल डांस का छोटा सा हिस्सा दिखाइए जो फेस्टिवल आफ इंडिया में आपने पेरिस में किया था। हम खुद वहाँ थे। द फ्रेंच वर स्पेल बाउंड।

वसुन्धरा : थैंक्स ए लाट सर। उस डांस के दो छोटे हिस्से करने की कोशिश करती हूँ। रौद्र और श्रृंगार। **(खड़ी हो गई। रौद्र-रसवाला भाग लगभग कौल की तरफ देखकर करती है और श्रृंगार-रसवाला हिस्सा शर्मा की तरफ देखकर)**

शर्मा : यू आर रियली गुड।

वसुन्धरा : थैंक्स ए लाट सर। मैं जाऊँ सर। इंटरव्यू का रिज़ल्ट कब तक पता चलेगा? हम स्ट्रगलिंग आर्टिस्ट्स.....

शर्मा : डू नाट से स्ट्रगलिंग आर्टिस्ट–हमें दुख लगता है। वी विल लेट यू नो बाय टूमारो।

वसुन्धरा : थैंक्स। थैंक्स आल आफ यू **(बाहर जाती है)।**

शर्मा : अच्छी है।

दोनों अफसर : बहुत अच्छी है।

शर्मा : बुलाइए। अगला कैन्डीडेट बुलाइए।

अफसर : सर। नैक्सट कैन्डीडेट रजत.....

कौल : शर्मा साहब। रजत पिछले दस सालों से थियेटर में काम कर रहा है। अच्छा एक्टर है। मेरे कई नाटकों में काम किया है उसने। मोरओवर ही नीड्स दिस जाब। पिछले साल आपने अपने हाथों से उसे बेस्ट स्टेज एक्टर का पुरस्कार दिया था।

शर्मा : बदरी भाई। हम तो पूरा साल पुरस्कार देते रहते हैं। हर कलाकार की इच्छा है पुरस्कार प्राप्त करे, तो हमारे हाथों से। इस बिज़ी जीवन में कब तक याद रहेंगी ऐसी मामूली बातें। आपने पहले क्यों नहीं बताया कि आप थियेटर वाले आर्थिक प्रॉब्लम का सामना कर रहे हैं। हम आपके लिए कोई ग्रान्ट लगवा देते। लैट्स सी। **(रजत का प्रवेश। पुराने लेकिन साफ कपड़े। शर्मा ने उसे, उसके कपड़ों को देखा, छोटे से पाज़ के बाद बैठने को कहा।)**

शर्मा : आपका नाम?

रजत : सर, रजत।

शर्मा : भई., यह तो हम भी जानते हैं, यू मस्ट हैव ए सर नेम लाइक आल अदर्स। आई एम कैलाश शर्मा, ही इज़ बदरी कौल। यह आधा नाम क्यों?

रजत : सर, आदमी आधा रह गया है आज के युग में । मोर-ओवर आई डू नाट बिलीव इन कास्ट सिस्टम, देयर-फोर ओनली रजत।

शर्मा : अच्छा। आप अंग्रेजी भी बोल लेते हैं। ग्रेट। **(बायोडाटा देखकर)** आप तो इतने सारे नाटकों में अभिनय कर चुके हैं। फ्री जीवन के आदी होंगे, नौकरी की क्या जरूरत पड़ गई?

रजत : सर। मेरा परिवार है। उनके साथ भी पेट लगा है। उन्हें भूख लगती है सर।

शर्मा : (तीखापन) पेट। आप लोग न पेट से नीचे जाते हैं न पेट से ऊपर। आदमी में मन है, माईंड है, आत्मा है। और इन सब से बनता है एक टोटल आदमी। संपूर्ण मानव। भूख केवल पेट तक क्यों लिमिट कर देते हैं आप लोग। ज्ञान की भूख, जो अनमोल है उसको समझने जानने की भूख। क्या आदमी आज भी जी रहा है केव-एज (Cave Age) में। ब्यूटी आफ द अननोन, द अनसीन एंड इट्स रिलेन्टलेस सर्च शुड बी द वाइटल कन्सर्न्ज़ आफ एन आर्टिस्ट। टी० एस० एलिएट हेज सेड–द मैन हू सफरज़ एंड द आर्टिस्ट हू क्रिएटस आर

डिफरेन्सीयेटड। भूल जाते हैं हम अपने, दूसरों के दुख, तब करते हैं किसी कविता या क्लैसिक कृति की रचना।

रजत : येस सर। लेकिन किसी भिखारी से चाँद की बातें तो नहीं कर सकते। भूखे बच्चे को परियों की कहानी सुनाकर रोज़ सुला तो नहीं सकते। सौन्दर्य, सर्च फार ब्यूटी शुड बी द कन्सर्न्ज़ आफ एवरी आर्टिस्टक माईंड। लेकिन इन सबकी बारी तो पेट के बाद आयेगी। भरे पेट के बाद।

शर्मा : आपने 'आषाढ़ का एक दिन' में एक्टिंग नहीं की आज तक। नाटक पसंद नहीं आया होगा आपको। बारिश की पहली बूँद से पैदा हुआ पेन ले जाता है कालिदास पास्ट की पेनफुल यात्रा पर।

रजत : 'आषाढ़ का एक दिन' महान है सर। विरह-व्यथा के इलावा कुछ और भी दुख हैं जमाने में। दोज़ इम्पोरटेंट्स कन्सर्न्ज़ फार अस।

शर्मा : डू नाट ट्राई टू ओवर ओल एंड इम्प्रेस मी विद यूअर इंगलिश। 'आपको वेटिंग फार गोदो' भी पसंद नहीं होगा।

रजत : वेटिंग फार गोदो' इस सदी का सबसे बड़ा रूपक, मेटाफर है। एक अर्थहीन जीवन और कुछ अच्छा घटने की प्रतीक्षा में खड़ा आदमी। लेकिन हमारे देश की प्रॉबलम ऐलिअनेशन और अर्थहीन जीवन नहीं—भूख, महँगाई...।

शर्मा : शुक्र है आपने यह नाटक पढ़ने की कृपा तो की। गोदो

के स्पेलिंग्स बताइए।

रजत : जी ओ डी ओ टी।

शर्मा : टी है तो बोलिए टी।

रजत : सर, टी साईलेंट है।

शर्मा : है, लेकिन क्यों साईलेंट है?

रजत : पता नहीं सर।

शर्मा : (खुश) हम बताएँ आपको। खुद मिले थे बैकेट से पेरिस में। जब दिल्ली में फेस्टिवल था तो इंडिया आने के लिए इन्वाईट करने गये थे। हमारा देश का बैड लक। बीमार थे आ नहीं पाये। सर पटक लिया था क्रिटिक्स ने, गोदो नाम कहाँ से आया। हमने पूछा उनसे। बैकेट ने खुद बताया उन दिनों में एक जाकी था पेरिस में, जिसका नाम गोदो था। डू यू नो वाट इज ए जाकी। घुड़दौड़ में हिस्सा लेने वाला घुड़सवार। एक एक्टर को थीम की, सैंस आफ हिस्ट्री की नालेज नहीं होगी तो खाक करेगा जस्टिस नाटक के साथ। ही शुड हैव ए क्रिटीकल सैंस आलसो।

रजत : जी सर। आप ठीक कहते हैं सर।

शर्मा : आप लोगों के नाटक आज तक किसी स्टेट ने स्पांसर नहीं किये। दो-तीन बार स्टेज होते हैं, आपके आलोचकों की हाय-तौबा के बावजूद। व्हाई ? आखिर क्यों ?

रजत : पता नहीं सर।

शर्मा : हम बताते हैं। भई, दर्शक और थियेटर के बीच लगातार लाईव-कान्टेक्ट होना चाहिए। फ़ोक थियेटर करिए,

लोगों से जुड़िए। योरोप का रियेल्ज़िम ठीक है, लेकिन अपनी जगह। अपने कल्चर और ट्रेडीशेन्ज से कट जायेंगे तो दर्शकों को खाक भायेंगे। एक्सपैरिमेंट्स हों, जरूर हों। लेकिन फ्रोक थियेटर को आज की सैन्सेबिलिटी से जोड़कर। क्या नाम है उस डायरेक्टर का जिसने किंग लियर छाऊ फ्रैंक आर्ट में किया था। याद नहीं आ रहा, लेकिन माईल स्टोन बन गया थियेटर में।

रजत : सर, बड़ा महान है, शेक्सपीयर से भी महान, जिसे पता ही नहीं था कि किंग लियर फ़ोक ट्रेडीशन में किया जा सकता है।

शर्मा : (कौल से) आप कुछ पूछिए बदरी भाई।

कौल : मुझे कुछ नहीं पूछना सर। रजत ने मेरे नाटकों में काम किया है। वह सचमुच एक अच्छा अभिनेता है। ही इज़ ए गुड एक्टर।

शर्मा : ही मस्ट बी, इफ़ यू से सो। बट एन एक्टर केन नेवर बी ए रिसपोन्सीबल आफ़िसर। (अफसरों से) आप लोग पूछिए, कुछ सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछिए।

अफसर 1: मार्क्स के पिता का नाम ?

रजत : पता नहीं।

अफसर 2: मेकबेथ की माँ का नाम?

रजत : पता नहीं।

दोनों अफसर : इतने ग्रेट एक्टर और आपको कुछ पता नहीं। सरप्राइजिंग।

अफसर 1: आपका कोई नाटक आज तक विदेश में स्टेज नहीं

हुआ। फैस्टीवल आफ इडिंया में शामिल नहीं किया गया, क्यों ?

रजत : पता नहीं सर।

अफसर 2: किसी भी स्टेट गवर्नमेंट ने आज तक आपका नाटक स्पोनसर नहीं किया, क्यों ?

रजत : पता नहीं सर।

दोनों अफसर : आपको कुछ पता नहीं। सरप्राइजिंग।

शर्मा : भई, आप लोग गल्त सवाल पूछ रहे हैं। एक लिमिटेड फील्ड का एक्सपर्ट होने से कोई स्कालर थोड़े ही हो जाता है। अब एक बहुत अच्छे धोबी या बढ़िया बढ़ई से आप भगवदगीता पर बहस तो नहीं कर सकते न। स्कील एंड एक्सपीरियेन्स इन ए नैरो फील्ड आफ़ लाईफ कैन नेवर मेक अस ग्रेट ओर कम्पलीट मैन। छोड़िए। एक्टिंग की बात हो जाये, जिन नाटकों में आपने काम किया है उन कैरेक्टर्ज का काम तो आप कर ही लेंगे। किसी सबजैक्ट या आदमी की इन्सटैन्ट एक्टिंग कर लेंगे आप?

रजत : इन्सटैन्ट एक्टिंग !

शर्मा : (विजयी मुद्रा) इम्प्रोवाईज़ेशन भई, आपकी तो अंग्रेजी भी बहुत कमजोर है। आपके अनुसार कला का मूल मुद्दा मनोरंजन है।

रजत : जी सर। एक कड़ी धूप में जी रहे लोग अगर सिनेमा अथवा थियेटर में कुछ समय के लिए हँस लें, अपने दुःख भूल जायें तो इसमें बुरा क्या है?

शर्मा : कुछ बुरा नहीं। बिल्कुल बुरा नहीं। मनोरंजन के नाम पर लोगों की सोच बुरा करने में कुछ बुरा नहीं। फिर तो आपको जानीवाकर और महमूद भी बहुत पसंद होंगे। चवन्नी क्लास के फेवरिट एक्टर ।

रजत : जी सर। जैस-तैसे लोगों को खुश तो करते हैं।

शर्मा : तो दिखाइए फिर। इन जैसे एक्टरों की एक्टिंग दिखाइए।

रजत : तो आप शराबी का अभिनय देखना चाहते हैं।

शर्मा : जी। कर सकते हैं तो दिखाइए करके।

(रजत उठा। पीठ मोड़ी। चेहरे पर दोनों हाथ रखे। पाज़ के बाद मुड़ा, लड़खड़ा कर चला, सामने खड़ा हो गया।)

रजत : **(लड़खड़ाती आवाज)** आप महान हैं सर, एकदम महान। जानते हैं क्यों? क्योंकि आपके नाम के साथ लगे हैं तीन जादू-अक्षर–मैजिक लैटर्ज़–आई० ए० एस०। किशोर चन्द शर्मा आई० ए० एस०, कमिश्नर कल्चर। हर वक्त आपकी महानता के चर्चे। आप चालीस के हुए तो पत्रिकाओं के विशेषांक, आप पचास के हुए तो पत्रिकाओं में हाहाकार। आप महान हैं सर, एकदम महान।

(सधी आवाज) कौन है कोई दूसरा, आपके अतिरिक्त जिसे इतनी चिन्ता लगी हो कला और संस्कृति की। लगा दी है आपने पुरस्कारों की बरसात और बना दिया है कलाकारों को कुत्ता, पालतू कुत्ता। पुचकारने पर भी दुम हिलाता कुत्ता, ठोकर खाने पर भी दुम हिलाता कुत्ता। नालिक का कुत्ता, अगर नहीं हाथ चढ़े आपके तो

हम थियेटर वाले। क्योंकि बहुत सख्त हड्डी के बने होते हैं, हम हरामी थियेटर वाले। बताऊँ मैं क्यों नहीं मिलते हमारे जैसे लोगों को सरकारी स्पांसर्ड शोज़ क्योंकि नहीं आता हमें आला अफसरों के तलुए चाटना।

(ऊँची आवाज) होती है, हरगिज होती है आपको भी व्यथा और विरह लेकिन सिर्फ कल्चर के कारण। मर रहे थे हादसे में हजारों लोग। लेकिन आपको खाये जा रही थी कल्चर फैस्टीवल की चिन्ता। क्यों ? क्योंकि नही रुकता कल्चर लोगों की मृत्यु से।

(दहाड़ता है) तेरे बाप टी० एस० एलियट, जिसके नाम की तू माला जपता है, जानता है क्या बताए हैं उसने कवि और कविता के बुनियादी सरोकार। ब्यूटी नहीं। सिर्फ ब्यूटी नहीं। बट द बोरडम, द हारर ऐंड द ग्लोरी। तुम मुग्ध हो, आतममुग्ध। **(आगे झुक, दोनों हाथों से एक का कुर्ता पकड़ उसे खड़ा कर देता है)** बहुत पीड़ा हो रही है। तेल और चटाई हमेशा अपने पास रखने चाहिए अगर ऐसा शौक हो।

कला के कंजर। तेरे हगने में कला है–कला। तेरे मूतने में कला है–कला। चुप क्यों हैं। क्यों है चुप। बताऊँ मैं। जैसे तू साईलैंट है इस वक्त, वैसे ही गोन्दो में टी साइलैंट है, जैसे......

(कौल रजत को घसीटकर कमरे से बाहर ले जाता है)

अंक–3

[रिहर्सल का कमरा और मंच]

कान्ता : बीच वाला सीन कर लें। कौल साहब तो आज देर से आयेंगे।

महेन्द्र : एक्सपर्ट हैं। रजत को डैपुटी डायरेक्टर बनाकर ही लौटेंगे।

बलवंत : मैंने फिर से पढ़ा नवीन जी का नाटक। वैल्यूज़ और आदर्श की बातें इतनी बुरी तो नहीं।

राजीव : प्यारे, नया-नया आया है इस महानगर में। थोड़े दिन और ठहर। फिर बताना कहाँ गईं तेरी और नवीन जी की वैल्यूज़। कट थ्रोट कम्पीटिशन है जिन्दा रहने के लिए। आज के ज़माने में जीवन मूल्यों की बात या तो कोई आदर्शवादी कर सकता है या कोई बेवकूफ। देयर इज़ नाट मच ऑफ ए डिफ़रेंस दीज़ डेज़ बीटवीन एन आईडियेलिस्ट एंड ए फूल।

महेन्द्र : बड़ी जोरदार लाइनें बोलने लग पड़ा तू। एक्टर से लेखक कब बन गया।

बलवंत : मेरी सलाह है हम लोग फिर से नवीन जी का नाटक....

महेन्द्र : चुप ! हो जा चुप। तेरे रिकार्ड की सुई अभी तक अटकी है नवीन जी पर।

कान्ता : तुम लोग बलवंत को बोलने क्यों नहीं देते। हमेशा खाने

को पड़ते हो। नहीं है उनका नाटक इतना बुरा, कहीं है कुछ जो हमारी पकड़ में नहीं आ रहा।

राजेश : जब पकड़ में आ जाये तो बताना। अभी तो आप बीच वाला सीन करवा दें अपने नाटक का।

बलवंत : रजत जी की प्रोक्सी कौन.........

महेन्द्र : यार, तू बहुत डरता है रजत से। कुछ कॉन्फीडेंस पैदा कर। नहीं तो प्यारे जरूर निकाल दिया जायेगा। वैसे तू उससे डरता ठीक है। क्या मर्द है, मीना भाभी भिगो-भिगो कर जूते मारती है और उफ़ तक नहीं करता।

राजेश : महेन्द्र तू कमीने का कमीना रहेगा, किसी की पर्सनल लाइफ को तो बख्श दिया कर। उसकी रामायण बन्द करो। कान्ता जी आप एक सीन करवा दो।

कान्ता : ठीक–बलवंत तुम एन्ट्री लो। वह वाली लाइनें बोलो– उस कमीने मास्टर को एक्सपोज़ करने वाली लाइनें। महेन्द्र तुम बैठ जाओ कमीने मास्टर वाली जगह।

राजीव : कौल साहब कास्टिंग हमेशा ठीक करते हैं। कमीने को कमीने का रोल दिया।

महेन्द्र : प्यारे ! आज तू लंच अपने पैसों से करेगा और मैं जानता हूँ तेरी जेब खाली है। **(कमरे में रखे स्टूल पर बैठा, नज़र का चश्मा लगाया)**

कान्ता : स्टार्ट। बलवंत एन्ट्री लो।

बलवंत : सर्दी का सबसे भयंकर सूखा और टयूबवैल के स्थान पर टी० वी० ताकि पिलाई जा सके लोगों को धर्म की अफ़ीम। रामायण, महाभारत की अफ़ीम.....

महेन्द्र : मैं जानता हूँ तुम्हारे अन्दर एक लाल झण्डा उग आया

है। सरकार की एक ठोकर से फट जायेगा तेरा झण्डा।

बलवंत : मास्टर जी, अब नहीं डरते लोग सरकार से। अपने हक लेंगे। ताकत से लेंगे।

महेन्द्र : (खड़ा होकर) अच्छा! इस देश के लोगों को किसने लगा दिये ताकत के टीके। और बड़े-बड़े कवि और लेखक सरकार की शरण से निकलकर सीधे पहुँचते हैं भगवान की शरण में। 'हारे को हरि नाम' और 'जय जानकी यात्रा' लिखना शुरू कर.....

(एक बूढ़े आदमी का प्रवेश। कपड़ों पर कई जगह रंग लगा हुआ। रिहर्सल रुक गई।)

राजीव : दादा तोम्हीं भूल गया। शो आज नहीं है। यह जादू बक्सा का क्या करेगा?

(बलवंत कुर्सी दादा के पास रखता है। चौकड़ी मारकर बैठे। बीड़ी का कश लिया।)

दादा : नहीं भूला। तुम लोगों का बन्दर का माफ़िक सूरत देखने आया। भालू बन्दर से मानुख बनना सरल नहीं। तुम लोग बोलना जारी रखो।

कान्ता : (सबसे) कोई रजत की प्रोक्सी कर लें। उसके बिना यह सीन......

राजेश : आप खड़ी होकर उसकी लाइनें पढ़ दें। स्पीच तो उसने याद कर ली होगी। क्या भयानक मैमोरी है। रजत आदमी नहीं एल. पी. है एल. पी. .....

(मीना का प्रवेश–एक हाथ में टिफिन का डिब्बा, दूसरे हाथ से अंगद को पकड़े। दादा को देखते ही अंगद हाथ छुड़ाकर उसकी ओर बढ़ा। पैर कुर्सी से नीचे किये, अंगद को पास बैठाया। मीना ने खाने का डिब्बा मेज पर रखा।)

महेन्द्र : भाभी, क्या है डिब्बों में, खीर पूड़ियाँ लाई होंगी। रजत साहब के डिप्टी डायरेक्टर बनने की एडवांस पार्टी–खोलूँ। हो जाये पार्टी शुरू।

मीना : रोटी लाई हूँ आपके महान अभिनेता के लिए। इंटरव्यू के लिए गये, जनाब पर्स घर भूल गये। सारा दिन भूखे रहे होंगे। पता था पहले यहाँ पहुँचेंगे। अपने मंदिर में।

कान्ता : पैसे बिल्कुल नहीं थे जेब में। माई गॉड–इंटरव्यू की जगह तो यहाँ से आठ-दस किलोमीटर दूर है। पैदल आ रहे होंगे।

अंगद : महेन्द्र अंकल। पापा अफ़सर बनेंगे तो कार मिलेगी ना उनको?

महेन्द्र : हाँ प्यारे। कार और कोठी दोनों। अब अंगद साहब लोकल बस में स्कूल नहीं जायेंगे। (गाकर)

कार में जायेंगे।

पापा के गुण गायेंगे।

अंगद : अंकल कल आपने टी. वी. देखी?

महेन्द्र : ना प्यारे। कल हम तेरी आंटी की चमचाबाजी कर रहे थे। उन्हें पिक्चर दिखाने ले गये। क्या देखा कल दूरदर्शन पर?

अंगद : जयपुर के अस्पताल का प्रोग्राम दिखाया था। डाक्टर ने लकड़ी का पैर बनाया है। 'जयपुर फुट। बता रहे थे इसे लगाने से लँगड़े ठीक हो जाते हैं। बहुत कीमती होगा।

महेन्द्र : (थोड़ा गुस्सा) कितना महँगा होगा। (बाकी लोगों से) मेरे पीछे बोलो, शपथ लो–

इस नाटक से जितने पैसे आयेंगे।
अंगद के लिए जयपुर से फुट लायेंगे।

(कान्ता, राजीव और दादा पीछे बोलते हैं।)

अंगद : (ताली पीटकर) आप बहुत अच्छी एक्टिंग करते हो अंकल।

महेन्द्र : (गम्भीर) अंगद एक्टिंग नहीं। शपथ ली है, शपथ। मैं ले चलूँगा तुझे अपने साथ जयपुर।

(रजत का प्रवेश। मेज पर रखा टिफिन देखा, उधर झपटा। पहला डिब्बा खोला, रोटी गोल की, निगलना शुरू)

मीना : रुको। एक मिनट रुको। दाल-सब्जी निकालने दो।

रजत : निकालो। वह भी निकालो खा लूँगा (दूसरी रोटी भी गोल कर खाना शुरू)

(मीना ने सब्जी–दाल डिब्बों के ढक्कन खोले। पर्स से चम्मच निकाल रजत की तरफ बढ़ाया। उसने दाल का डिब्बा उठाया, हिलाया और मुँह लगा पीना शुरू, थोड़ी दाल जाकेट पर गिरी। मीना ने साड़ी के पल्लू से पोंछी–डिब्बा रखा। तीसरी रोटी गोल की। गले में अटकी। कान्ता ने पानी का गिलास पकड़ाया। पूरा पीकर रोटी खानी शुरू।)

मीना : आराम से खाओ। पीछे चोर तो नहीं लगे। हमेशा गले में रोटी फँस जाती है।

अंगद : पापा, बहुत भूख लगी है। चाय भी नहीं पी ?

रजत : ना बेटे।

राजीव : इंटरव्यू कैसा रहा?

रजत : अच्छा, बहुत अच्छा।

अंगद : (खुश) अब हम कार में स्कूल जायेंगे.....

(रजत का मुँह की तरफ बढ़ता हाथ बीच में रुक गया। नीचे किया।)

मीना : अंगद ! बीच में नहीं बोलते। पापा को खा लेने दो। सवेरे से एक दाना अन्न भी नहीं गया पेट में। जनाब ने तो नाश्ता भी नहीं किया। इंटरव्यू में लेट हो जाएँगे।

(इस खाने के सारे दृश्य में दादा जी रजत की तरफ देखते रहेंगे–बीड़ी पर बीड़ी जलाते रहेंगे।)

मीना : (डिब्बा रजत की तरफ बढ़ाकर) एक रोटी सब्जी के साथ भी खा लो।

(रजत ने रोटी खत्म की। हाथ पौंछने के लिए रूमाल निकाला)

अंगद : पापा हाथ धोकर आओ। ओमपुरी अंकल रोज टी. वी. में बताते हैं–खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धोने चहिए। साबुन न हो तो राख से धो लेने चाहिए।

(रजत बाहर गया। कौल का प्रवेश)

सब लगभग एक साथ : कैसा रहा इंटरव्यू सर? रजत को नौकरी मिल जायेगी ना?

कौल : (कठोर आवाज) नहीं। रजत आ गया ? कहाँ है?

कान्ता : हाथ धोने गये हैं।

कौल : तुम लोगों ने उसके साथ इंटरव्यू की बात तो नहीं की?

आवाजें : नहीं सर।

कौल : करना भी मत, उसका अपमान किया गया। घोर अपमान। एक आई. ए. एस. अफसर का गला पकड़ लिया उसने।

अंगद : (खुश) अंकल। पापा ने उसे मारा ?

कौल : मारा नहीं बेटे, मलियामैट कर दिया वह तो पुलिस में रिपोर्ट कर रहा था। रजत अन्दर होता, अन्दर। मैंने बदनामी का डर दिखाया तो ठंडा हुआ। पता है उन कुत्तों ने क्या सवाल पूछे?

मीना : क्या?

कौल : मार्क्स के पिता और मैकबैथ की माँ का नाम बताओ।

महेन्द्र : (तेज आवाज) लेकिन क्यों?

कौल : हाऊ डू आई नो, उनसे पूछो।

अंगद : अब मैं कार में स्कूल......

मीना : चुप ! भगवान के लिए चुप हो जाओ। प्रॉमिस करो, पापा से कुछ नहीं पूछोगे।

अंगद : प्रॉमिस मम्मी।

(दादा उसके माथे पर हाथ फेरते हैं। रजत का प्रवेश।)

रजत : आ गये कौल साहब, रिहर्सल शुरू करें।

कौल : येस, तुम शराबी ब्राह्मण वाली एन्ट्री लो। बीवी को गालियाँ देने वाला सीन। कान्ता सामने खड़ी हो जाओ।

(दोनों ने अपनी जगह ली।)

रजत : भरी दोपहर तीन घंटे शमशान में मुर्दा फूँककर आओ और ऊपर से ठंडी-ठंडी रोटी। छोड़ने की धमकी देती है और मुझे। जानती नहीं औरत की औकात, चौपाल में

रखी चिलम। जब जी चाहा कश खैंचा और.....

कौल : स्टॉप। लाइनें बोल रहे हो कि पहाड़ा रट रहे हो। औरत की औकात वाली लाइन गुस्से से नहीं हिकारत से बोलो। तुम अपनी बीवी को पीट चुके हो।

रजत : जानती नहीं औरत की औकात......

कौल : **(बाल नोचता है।)** नहीं रजत, ऐसे नहीं। **(दरवाजे के पास खड़ा हो, हिकारत, नफरत भरी आवाज में बोलकर दिखाता है)** जानती नहीं औरत की औकात।

महेन्द्र : (कौल की सी आवाज में) जानती नहीं औरत की औकात ।

कौल : दैट्स इट–महेन्द्र की तरह बोलो।

रजत : सर। आप यह रोल महेन्द्र से करवा लें ।

महेन्द्र : (रजत से) सॉरी सर, मैं तो आपकी हैल्प....

रजत : क्या कहा ?

महेन्द्र : सर मैं आप.....

रजत : (चीख कर) डोन्ट कॉल मी सर। फिर सर कहा तो तुम्हारा खून कर दूँगा। आई विल किल ऑल दी बलडी सर्ज़ ऑफ दिस वर्ल्ड।

(कुर्सी पर बैठ रजत ने मुहँ पर हाथ रखे। गिड़गिड़ाकर बोला।)

रजत : सॉरी, महेन्द्र। आई एम रियली सॉरी।

कौल : राजीव चाय मँगवाओ। यार बंद करो थाड़ी देर रिहर्सल।

(राजीव बाहर गया।)

(दादा रजत के पास आये। बीड़ी उसकी तरफ की।)

रजत : नहीं दादा। नहीं पीयेगा।

दादा : तोम पीयेगा। रोजत बाबू तोम बीड़ी अवश्य पीयेगा। (दादा ने बीड़ी जलाकर उसे दी। रजत ने मुट्ठी बंद करके कश खेंचा।)

दादा : रोजत अपना क्रोध नहीं जीने का मंच पर। अपना दुख नहीं जीने का। पात्र का दुख जीबो। अभिनेता का अपना कोई जीवन नहीं। मंच पर आने से पूर्व अपनी हत्या कर लेता है अभिनेता।

(चाय वाले छोकरे का लकड़ी के डिब्बे में गिलास रखे प्रवेश। सबने गिलास लिया। मीना ने दो गिलास उठाये। एक रजत को दिया, उसके कंधे पर हाथ रखे। अपने गिलास से चाय पीनी शुरू की। राजीव का प्रवेश)

राजीव : (कौल से) सर, नवीन जी आ रहे हैं अपनी वाइफ के साथ।

कौल : हे भगवान–मैंने सोचा यहाँ से चले गये। उठाओ उनकी स्क्रिप्ट उठाओ। रजत उस लम्बी स्पीच का एक हिस्सा बोल देना यार।

रजत : अभी तो याद भी.....

कौल : पढ़कर बोल दो।

बलवंत : सर आप कहें तो मैं बोल दूँ। मुझे याद है।

कौल : ठीक ! तू बोल देना।

(पत्नी का सहारा लिये लेखक नवीन का प्रवेश, सबने उठकर अभिनन्दन किया, चेहरों पर अपराध भावना, कौल ने उन्हें कुर्सी दी, नवीन ने हाथ जोड़कर सबको नमस्कार किया)

नवीन : क्षमा करें। कुछ दिन आ नहीं सका। शरीर थोड़ा ठीक नहीं था। सोचा आज आप लोगों के संग बैठ अपने नाटक की रिहर्सल देख लूँ। (कौल से) कौल साहब आप शुरू करवायें ना। (कौल ने वलवंत को संकेत दिया। वह खड़ा हो गया।)

वलवंत : सन्तान ने आपको भी कभी असीम सन्ताप दिया होगा। कड़कती बिजली और बरसती बरसात, तार-तार कपड़े पहन, चीख-चीखकर चुनौती देता किंग लियर हम हैं। मात्र हम.....

नवीन : आपने रिकास्टिंग कर दी कौल साहब। हमें लगा था यह रोल रजत जी.....

कौल : (खुश्क आवाज) नाटकों में कई बार ऐसा होता है। हम लोग बीच में एक्टर बदल देते......

नवीन : ठीक बदलते होंगे आप। कितने हैं हमारे यहाँ आप जैसे निर्देशक। परन्तु एक सलाह दूँ यदि आपको बुरा न लगे।

कौल : दीजिए, जरूर दीजिए।

नवीन : एकालाप का यह भाग अभिनेता को लगभग प्रलाप, अर्ध-पागलपन की स्थिति में बोलना चाहिए।

कौल : (बिल्कुल नाराज) पागलपन एकदम नहीं आता। स्टेज बाई स्टेज आएगा। अब समझा आज तक आपका कोई नाटक स्टेज क्यों नहीं हुआ। यू डोंट नो ए. बी. सी. आफ स्टेज क्राफ्ट। आप मुझे समझायेंगे, मुझे।

नवीन : (खड़े होकर) कौल साहब मुझे क्षमा कर दें। आपको डिस्टर्ब किया। (पत्नी की तरफ देखकर) चलते हैं।

आप जैसे ठीक समझें नाटक करें।

(पत्नी नवीन को सहारा देकर बाहर ले गई। कान्ता, महेन्द्र, राजीव साथ छोड़ने गये। छोटी सी चुप्पी। सब के चेहरों पर कोई अपराध। कान्ता के साथ लेखक की पत्नी का फिर प्रवेश। सब हड़बड़ा गये।)

पत्नी : बैठे रहिए। आप लोग बैठे रहिए। उनकी ओर से क्षमा माँगने आई हूँ। जानती हूँ आप उनका नाटक नहीं कर रहे। इतना कम है क्या कि उनका दिल रखने के लिए आपने झुठमूठ उनके नाटक का सीन कर दिया। कितने अच्छे होते हैं आप थियेटर वाले। किसी का दिल नहीं दुखाते। वह पिछले तीन दिन से अस्पताल में हैं। जिद कर बैठे रिहर्सल देखनी है। डाक्टर से बिना पूछे यहाँ ले आई। अच्छा चलती हूँ।

अंगद : आंटी। मैं आपके साथ चलूँगा। (कुर्सी से उठा। लँगड़ाकर उसकी ओर बढ़ा। वह बिल्कुल स्तब्ध, शोक की हालत में खड़ी है। अंगद पास पहुँचा। उसका माथा, मुँह लगातार चूमना शुरू कर दिया। झिझक के कारण अंगद पीछे हटा। उन्होंने कलेजा फाड़ देने वाली लम्बी चीख मारी। फर्श पर गिरी, चीखी 'मेरा बेटा, मेरा बेटा' और लगातर अपना मुँह हाथों ने पीटना शुरू कर दिया। मीना ने भागकर उनके मुँह पीटते हाथ पकड़े।)

मीना : क्या हुआ आपके बेटे को। (उन्होंने झटके से हाथ छुड़ाये, फर्श पर मारने शुरू कर दिये।)

लेखक पत्नी : मर गया। हमारा बेटा, मर गया (चीख) हमारा

इकलौता बेटा। मर गया, मर गया (फर्श पर सिर रख लगातार एक घायल आवाज में रोती है।)

(सब के सब बुत बने खड़े हैं। अंगद पानी का गिलास लाया। नीचे बैठा। उसका चेहरा ऊपर उठा होठों से लगाया। पानी कपड़ों पर गिरा)

कौल : जाओ। कोई जाओ। नीचे से नवीन जी को बुला लाओ।

लेखक पत्नी : मत बुलाइए। भगवान के लिए उन्हें कुछ मत बताइए नहीं तो......

अंगद : आंटी प्लीज, रोते नहीं। मेरी एक टाँग खराब है। मैं कभी नहीं रोता। फिर आप क्यों रोती हैं। कैसे मरा भैया?

लेखक पत्नी : बेटा, बिल्कुल तुम्हारे जितना था जब सड़क दुर्घटना में उसकी दोनों टाँगें कट गई। और वह बनना चाहता था अभिनेता। उसके जीने की इच्छा बिल्कुल नहीं रही। घुल-घुल कर मर गया। यह नाटक इन्होंने अपने मृत बेटे के मृत सपनों को लेकर लिखा है। (उसका माथा चूमकर) तुम कभी मत मरना बेटे–हमारे बेटे की तरह कभी क्रूर मत होना ।

अंगद : प्रोमिस आंटी। मैं नहीं मरूँगा। मेरा नाम अंगद है, अंगद। कौन मार सकता है मुझे। रावण के बड़े-बड़े योद्धा मेरा पाँव नहीं उठा सके।

(अंगद हाथ पकड़े उन्हें दरवाजे की तरफ ले जाता है। दोनों के जाने के बाद एक स्तब्ध चुप्पी। कौल ने आगे बढ़ कमरे के बीच से स्टूल हटाया। सबने जिस नाटक की रिहर्सल हो रही थी उसका सामान उठाना शुरू

कर दिया। धीरे-धीरे नये नाटक का सैट उभरना शुरू। अलग-अलग अथवा दो-तीन के ग्रुप में खड़े हो अभिनेता संवाद बोलना शुरू)

रजत : एक जातक कथा सुनाऊँ आपको।

महेन्द्र : राजन आज युद्ध क्षेत्र में.......

बलवंत : इस पीड़ा का कोई इलाज नहीं सिवाय सहने के। दुख की आग हमें माँजती है।

(संवादों के इस शोर में अँधेरा होना शुरू। कौल दादा के पास गया।)

कौल : दादा हो जायेगा नाटक दो दिनों में।

दादा : तुम कर लेवें कौल बाबू। तुम्हीं अवश्य कर लेवें। तुम्हीं थियेटर का सबसे बड़ा कुत्ता। तुम कर लेवें। पिछला नाटक चार दिनों में.......

रात के समय के लिये एक बल्ब की रोशनी। दिन का समय सूचित करने के लिए पूरा प्रकाश। मंच पर धीरे-धीरे नये नाटक के सैट भी लगेंगे तथा अभिनेताओं के कपड़े भी बदलेंगे।)

कौल : लास्ट स्पीच की अंग्रेजी वाली लाइन बोलो।

रजत : देयर इज ए स्पेशल प्रोविडेंस इन दी फाल ऑफ़ स्पैरो।

कान्ता : सर, यह लाइन हिन्दी में बोलकर देखें।

कौल : हाँ, बोलो तुम बोलो।

कान्ता : नहीं मरती एक चिड़िया भी प्रभु की इच्छा के बिना।

कौल : नो अंग्रेजी में ठीक है। स्पीच का सारा रिदम टूट जायेगा। महेन्द्र तुम एन्ट्री लो। रजत मंच के बीच खड़ा होगा। कान्ता तुम दूसरे दरवाजे में। प्रहरी कोई सर्वनाश

का समाचार लाया है। तुम एकदम पत्थर बन जाओगी सुनकर। क्लीयर। स्टार्ट।

महेन्द्र : **(दरवाजे से अन्दर आकर)** राजन.....

कौल : स्टॉप। तुम दरवाजे से अन्दर बिलकुल नहीं आओगे। द्वारपाल सम्राट के कमरे में नहीं......

महेन्द्र : सर आपने ब्लाकिंग तो नहीं की।

कौल : यह ब्लाकिंग ही कर रहा हूँ मेरे बाप। एन्ट्री लो।

महेन्द्र : **(दरवाजे पर)** राजन......

(कौल ने देखा रजत उसकी ओर पीठ किये चेहरे पर हाथ रख रहा है।)

कौल : बंद करो यह दिलीप कुमार वाला मैनरिज़म। तुम्हारा फेस पहले से ही दरवाजे की तरफ होगा। तुम गार्ड के कदमों की आवाजें सुन चुके हो। जानते हो तुम कि वह कोई टैरिबल न्यूज़ लायेगा।

राजेश : सर भूख लगी है खाना....

कौल : भूख लगी है। खाओगे। गाली खाओगे। राजीव तुम किसी को साथ ले जाओ। पैक्ड खाना ले आओ। यह पूरा महीना रिहर्सल करने की रईसों वाली आदतें मेरे साथ नही चलेंगी। **(यहाँ निर्देशक ने प्रकाश नियोजन के द्वारा स्पष्ट करना है कि अगली शाम हो गई।)**

अंगद : पापा मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।

रजत : मत जाना।

मीना : अंगद तुम्हारा आफ्टरनून स्कूल है। मैं पाँच बजे लेने आ जाऊँगी। नाटक तो सात बजे शुरू होगा न। शोभा कल तुम्हारे लिए नई कमीज लायेगी। रेडिमेड शर्ट।

नये कपड़े पहनकर नाटक देखेंगे।

अंगद : कौल अंकल, मैं मेकअप रूम में आ जाऊँ।

कौल : आ जा ना यार। लेकिन अब बिलकुल चुप बैठो। (रजत से) स्पीच का आखिरी हिस्सा बोलो। जातक कथा वाला।

रजत : एक जातक कथा सुनाऊँ आपको। भगवान बुद्ध प्रवचन दे.......

कौल : स्टॉप! जानते हो जातक कथाएँ भगवान बुद्ध की हैं। एकदम शान्त। स्पीक लाइक ए सेन्ट। तुम दुख की नदी से बाहर निकल चुके हो। सुख से मुक्त, दुख से मुक्त। आचार्य रजनीश के कैसेट सुने हैं, उन जैसी आवाज...।

रजत : मैं अपनी आवाज में बोल लूँगा।

कौल : तो बोलो। बोलो फिर।

(मंच के एक कोने में बड़ा सा आइना कुछ अभिनेता रखते हैं। दीवार से लटके दो-तीन छोटे दर्पण, मेकअप का सामान। मेकअप रूम मंच पर ही बनाना, दिखाना है। अगली शाम नाटक के प्रथम मंचन की शाम में निर्देशक को दृश्य बदलना है। मेकअप रूम में हो रही बातें दर्शक सुनेंगे। अभिनेता शायद किसी मध्य युगीन समय के कपड़े पहने हैं। रजत चोगा डाले बड़े आइने के सामने रखे स्टूल पर बैठा है। लगातार अपना चेहरा देखता। लेकिन आत्मविश्वास कहीं कम है। दादा ने उसकी आँखों के नीचे का हिस्सा ब्रश से थोड़ा काला कर दिया, रजत ने उसकी ओर देखा।)

दादा : तुम्ही सब कुछ हार गया। टोटल पराजय। दुख बहोत हों तो आँख के नीचे का भाग काला हो जावे।

रजत : (डरी आवाज) दादा कर लूँगा न।

दादा : रजोत तुम अवश्य कर लेगा। तुम अन्दर की काली दुनिया का अभिनेता। करेगा, बिना कालिख करेगा। (उसकी आँखों के नीचे लगा काला रंग पोंछता है।)

(नाटक शुरू होने की पहली घंटी बजने के साथ घबराई हुई मीना का प्रवेश।)

मीना : मुझे स्कूल जाने में देर हो गई।

रजत : कैसे हो गई देर? अंगद कहाँ है?

मीना : स्कूल के गेट पर नहीं था जब मैं.....

महेन्द्र : तुम कमाल की लापरवाही करती हो भाभी, अगर अंगद को कुछ हो गया तो मैं तुम्हें....

(शोभा का प्रवेश। सब उसकी तरफ भय-उत्सुकता से देखते हैं। नाटक शुरू होने की दूसरी घंटी।)

शोभा : मैं अंगद को लेने पहले स्कूल पहुँच गई। जिद करने लगा, लेखक अंकल के पास अस्पताल जाऊँगा। उनके साथ बैठकर नाटक देखूँगा। (नवीन जी का हाथ पकड़े अंगद का हाल में प्रवेश। लेखक पत्नी ने अंगद का हाथ थाम रखा है। नाटक शुरू होने की तीसरी घंटी। स्टेज के बीच प्रकाश वृत। मेकअप रूम में अब अँधेरा। महेन्द्र प्रहरी के कपड़ों में एक दरवाजे पर, कान्ता दूसरे दरवाजे पर। रजत ने दादा के पाँव छुए।)

महेन्द्र : राजन, आज युद्धभूमि में आपके इकलौते पुत्र··· (रजत उसकी तरफ से मुड़ा। दर्शकों की तरफ मुँह किया। मंच पर वह जहाँ-जहाँ चलेगा प्रकाश वृत वहाँ-वहाँ। प्रकाश कभी मद्धम कभी बिल्कुल नहीं। संगीत प्रकाश

का संयोजन एकालाप के भावों के अनुसार।)

रजत : एक लड़का था उसकी टाँगें। नहीं एक लड़का था उसकी टाँगें नहीं रहीं और बनना चाहता था वह अभिनेता। क्योंकि नहीं रहता था वह हम दो टाँगों वाले विकलांगों के इस ज़लील जमाने में। उसका था अपना रुपहला संसार, जादूनगरी। जिसे कहते हैं हम रंगमच। और इस मुग्ध कर देने वाले संसार में कहीं नहीं थी महँगाई की मार, अथवा लाशों का अम्बार। दुखों को धो देने वाली, हमारे दुखों को धो देने वाली यह जादूनगरी थी, थियेटर। इस दुनिया में कहीं नहीं थी नंगी राजनीति। एक लहुलुहान समाज को जन्म देने वाली नंगी राजनीति। लेकिन वह लड़का मर गया। देयर इज़ ए स्पैशल प्रावीडैंस इन द फाल आफ ए स्पैरो।

कला की काल कोठरी। धू-धू कर जलती काल कोठरी। कर गया जो प्रवेश इसमें नहीं आ सकता कभी बाहर। एक लम्बा, काला कारावास। इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं। बिल्कुल कोई रास्ता नहीं। सूर्य की किरण, मात्र एक किरण के लिए भी कोई प्रवेश द्वार नहीं। क्यों चुनते हैं हम इस काल कोठरी को अपनी इच्छा से। मुक्ति के लिए। हमारी, आपकी मुक्ति के लिए। दुख, संताप, क्रोध, हिंसा, द्वेष, और जो दोगला है, जो दिन-रात करता है हमारी आत्मा को लहुलुहान, उसे धोकर पौंछ देने के लिए। तभी तो आते हैं हम इस मायानगरी, थियेटर में। अपने आपसे मुक्त होने के लिए। **(लगभग प्रलाप, डिलियरम की आवाज में।)**

आपको भी कभी असीम सन्ताप दिया होगा सन्तान ने। तार-तार हो गये कपड़े। कड़कती बिजली। बरसती बरसात में चीख-चीख कर चुनौती देता किंगलियर। हम हैं, हम हैं किंगलियर। देह की विषैली देहरी से बाहर निकल पश्चाताप की अन्तिम सीमा पर खड़ा, सुलगती सलाखों से आँखें फोड़ता राजा इडिपस हम हैं। हम हैं राजा इडिपस। बन-बन भटकते राम हम हैं। लंका में दहाड़ते रावण हम हैं। अपनी बहन के एक के बाद एक पुत्र के हत्यारे कंस हम हैं। इस धू-धू कर जलती काल कोठरी में बैठे पौंछ देते हैं हम आत्मा के सारे घाव। एक लड़का था। उसकी टाँगे नहीं रहीं। और वह बनना चाहता था अभिनेता। क्योंकि नहीं रहता था वह हम दो टाँगों वाले विकलांगों के इस ज़लील जमाने में। देयर इज ए स्पैशल प्रोवीडैंस इन द फाल आफ ए स्पैरो। **(छोटी सी चुप्पी, पाज़। अब बिल्कुल शांत आवाज। एक संत की-सी वाणी में।)**

एक जातक कथा सुनाऊँ आपको। भगवान बुद्ध प्रवचन दे रहे थे। कोई नहीं बच सकता पापों के फल से, कर्मों के फल से। उस समय आई वहाँ एक माँ, अपना मृत बेटा गोद में उठाए विलाप करती माँ ने पूछा-भगवान, मात्र दो दिनों के जीवन में मेरे बेटे ने कौन से पाप कर लिये कि उसे मिला मृत्युदण्ड। आप भगवान हैं तो कर दें जीवित मेरे बेटे को। एक माँ का दुख तो भगवान भी नहीं सह सकते। आँखों में आँसू, होंठों पर मुस्कान, भगवान बुद्ध बोले-जा माँ, उस घर के चूल्हे से एक

चुटकी राख ले आ जहाँ कोई न मरा हो आज तक, कर दूँगा मैं जीवित तुम्हारे शिशु को। माँ प्रसन्न। एक चुटकी राख से हो जायेगा जीवित उसका पुत्र। सदियाँ बीत गईं। कहते हैं वह माँ आज भी शहर-शहर भटक रही है, द्वार-द्वार दस्तक दे रही है लेकिन नहीं मिला आज तक उसे वह घर, उस घर का चूल्हा, जहाँ आज तक कोई न मरा हो। नहीं देता है यह संसार एक चुटकी राख, मात्र एक चुटकी राख। **(प्रकाशवृत्त मध्यम होना शुरू।)** एक लड़का था। उसका था अपना एक रुपहला संसार। जादूनगरी। जिसे कहते हैं हम रंगमंच। और इस मुग्ध कर देने वाले संसार में कहीं नहीं थी, महँगाई की मार अथवा लाशों का अम्बार। लेकिन वह लड़का मर गया। देयर इज़ ए स्पेशल प्रोविडेंस इन द फाल आफ ए स्पैरो।

(अँधेरा पर्दा)